जुलाई-२०२४ ◆ वर्ष १३ ◆ अंक ०३ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जुलाई-२०२४

भारतवर्ष के युवा साथी सब,
तकनीकी सम्पन्न बने।
सौ वर्षों के पूर्व दयानन्द,
इस हेतु प्रयत्न करे।
वीज महोदय को इस हेतु,
ऋषिवर ने तब पत्र लिखे॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १५३

24 Carat
MDH मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
KITCHEN KING
MIXED MASALA POWDER
किचन किंग
CHUNKY CHAT MASALA
MIXED MASALA POWDER
चंकी चाट मसाला
GARAM MASALA
MIXED MASALA POWDER
गरम मसाला
SHAHI PANEER MASALA
MIXED MASALA POWDER
शाही पनीर मसाला
DRIED FENUGREEK LEAVES
PEACOCK
KASOORI METHI
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS
CHANA MASALA
MIXED MASALA POWDER
चना मसाला
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमाँसक
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)
नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक
भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२५
आषाढ़ शुक्ल द्वितीय
विक्रम संवत्
२०८१
दयानन्दाब्द
२००

July - 2024

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
5000 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

०७ आर्य समाज स्थापना के १५० वर्ष कहाँ खड़ा है आर्यसमाज?

१९ एक शाश्वत तपश्चर्या है प्रायश्चित

समाचार २९
हलचल ३०

०४	वेद सुधा
०६	सत्यार्थ मित्र बनें
१५	क्या वेदों में आतंकवाद है?
२२	विश्वशान्ति की समस्या
२४	आर्य जगत् का सौभाग्योदय
२५	स्वास्थ्य- अर्धावभेदक (माइग्रेन)
२७	कथा सरित- कहानी दयानन्द की

स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | वर्ष - १३ | अंक -०३ | द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर — मुद्रण

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

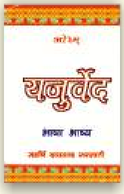

ओ३म्

वेद सुधा

हम मेधावी बनें

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।। - यजुर्वेद ३२/१४

हे ज्ञानरूप परमेश्वर! जिस मेधा (बुद्धि) की उपासना हमारे पितर और विद्वानों ने की है, उस मेधा से हमें भी अलंकृत करो। बुद्धि विद्या से श्रेष्ठ है, इसलिये कहा है -

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य, निर्बुद्धि कुतो बलम्।

बुद्धि में ही बल है, बुद्धिहीन के पास बल कहाँ? पंचतन्त्र में बुद्धि की प्रशंसा में कई ज्ञानवर्धक कथाएँ हैं, जो बुद्धि की श्रेष्ठता बताती हैं। हम प्रार्थना करते हैं, हमें उत्कृष्ट बुद्धि मिले। हम सद्‌बुद्धि पाकर ओजस्वी, तेजस्वी, और वर्चस्वी बनें।

महर्षि व्यास कहते हैं- पशुपालक की तरह लाठी लेकर देवता रक्षा नहीं करते, वे जिसकी रक्षा करना चाहते हैं, उसे सद्‌बुद्धि से समायुक्त कर देते हैं।

नैषधीय चरित में कवि कहते हैं- देवता प्रसन्न होकर और कुछ नहीं देते, बस सद्‌बुद्धि देते हैं।

गायत्री मन्त्र में है- **धियो यो नः प्रचोदयात्।** प्रभु हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करो। गीता में कहा है-

तेषां सततयुक्तानाम भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।। - श्रीमद्‌भगवद्‌गीता १०.१०

अर्थात्- सततयुक्त होकर प्रीतिपूर्वक भजन करने वालों को बुद्धियोग प्राप्त होता है, उस बुद्धियोग से उन्हें प्रभु की प्राप्ति होती है।

इस मेधा बुद्धि (Wisdom) की प्राप्ति केवल ईश्वर से ही सम्भव है। पिता अपने पुत्र को धन, सम्पत्ति, अधिकार सब कुछ सौंप सकता है, किन्तु अपनी मेधा या प्रतिभा का दान वह अपनी संतान को भी नहीं दे सकता। यदि ऐसा होता तो महापुरुषों की संतति मेधा, बुद्धिविहीन नहीं होती। वैदिक मन्त्रों में मेधा के लिये बार-बार प्रभु से प्रार्थना की गई है।

मानव का स्वाभाविक ज्ञान बहुत ही सीमित है। वह अपने जीवन व्यवहार की बहुत सी बातें अपने माता-पिता, गुरुजनों और सहयोगियों से सीखता है। आदिकाल में मानव ने यह व्यवहार किससे सीखा होगा? महर्षि पाणिनी इस प्रश्न का उत्तर देते हैं- जब मानव इस पृथ्वी पर आविर्भूत हुआ तो उसके पथ प्रदर्शनार्थ सृष्टि के आदि में परम गुरु परमात्मा ने अग्नि ऋषि के अन्तःकरण में ऋग्वेद का, वायु ऋषि के अंतःकरण में यजुर्वेद का, आदित्य ऋषि के अंतःकरण में सामवेद का और अंगिरा ऋषि के अंतःकरण में अथर्ववेद का प्रकाश किया। वेद ईश्वरकृत हैं, वेद किसी मनुष्य ने नहीं बनाए । परमपिता परमात्मा ने जब सृष्टि रची तब मनुष्य मात्र के हित के लिये इन चार ऋषियों के हृदय में आत्मा को प्रेरणा मिली। यही ज्ञान आदिकाल में एक दूसरे से सुन-सुन कर याद करने की परम्परा चलती रही, इसलिये वेद को श्रुति भी कहते हैं।

ऋग्वेद में ब्रह्मज्ञान है, इसमें तिनके से लेकर ब्रह्मपर्यन्त सभी प्रकार का ज्ञान भरा पड़ा है। ऋग्वेद में १० मण्डल, १०२८ सूक्त और १०५२२ मन्त्र हैं। जिनमें पृथ्वी, जगत्, भूगोल, खगोल और समस्त पदार्थों के गुण और गुणी का बोध कराया गया है। इसके उपवेद आयुर्वेद में चरक एवं सुश्रुत का ज्ञान है। यजुर्वेद कर्मप्रधान है इसमें ४० अध्याय और १९७५ मन्त्र संख्या है। इसके उपवेद धनुर्वेद में शस्त्र विद्या, राजनीति, व्यवसाय, कृषि,

पारिवारिक व्यवस्था को बताया गया है। सामवेद यह उपासना का वेद है। इसमें पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक दो भाग हैं तथा १८७५ मन्त्र हैं। इसके उपवेद गान्धर्ववेद में सामगान एवं संगीत विद्या, स्वर-ताल और राग-रागिनी का वर्णन है। अथर्ववेद विज्ञान है, इसमें काण्ड २० हैं, १११ अनुवाक, ७३१ सूक्त और ५९७७ मन्त्र हैं। इसमें कृषि, वाणिज्य, राजनीति, अर्थनीति और समाज शास्त्र आदि तत्वों का प्रतिपादन है। इसका उपवेद अर्थवेद है।

वेदों का सम्यक् ज्ञान पाने के लिये शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष और कौटिलीय शास्त्र आदि के अकूत ज्ञान के भण्डार को समझने के लिये वेदों में बारम्बार प्रार्थना की गई है। उपनिषद् में एक कथा है-

महर्षि उद्दालक के पुत्र श्वेतकेतु कई वर्षों तक विद्यार्जन कर जब अपने घर लौटे, तो पिता उद्दालक ने पूछा- पुत्र! तुमने सारी विद्याएँ तो सीख लीं, लेकिन क्या ब्रह्म को जाना, समझ लिया? उसे जाने समझे बिना सारी विद्याएँ व्यर्थ हैं। श्वेतकेतु ने कहा- मेरे आचार्य को जितनी विद्या आती थी, उन्होंने मुझे सिखा दी है, लेकिन ब्रह्मज्ञान के विषय में मैं नहीं जानता। पिता ने कहा- बाहर जाओ और पेड़ से एक फल तोड़ कर लाओ। वह ले आया तो उसे फल काटने के लिये कहा। श्वेतकेतु ने फल काटा तो उसमें बीज ही बीज भरे थे। पिता ने कहा- इसके प्रत्येक बीज में इतना ही बड़ा वृक्ष छिपा होना चाहिये, तुम बीज को काटो। श्वेतकेतु ने बीज काटा लेकिन उसमें कुछ नही, शून्य ही था। जो नहीं दिखाई दे रहा था, जो अदृश्य था, वह विशाल वृक्ष इसी बीज से पैदा हुआ है। इसी तरह हम भी ऐसे ही शून्य से आए हैं, वह जो दिखाई नहीं दे रहा है, उसी से हमारा जन्म हुआ है। श्वेतकेतु ने पूछा- क्या मैं भी उसी महाशून्य से आया हूँ? इस प्रश्न के उत्तर में उपनिषद् का महावचन है- **तत्त्वमसि श्वेतकेतु।** तू भी वहीं से आया है। यही ब्रह्मज्ञान है।

यह ब्रह्मज्ञान वह प्रकाश है जो मनुष्य के मन और मस्तिष्क का अंधकार समाप्त कर देता है। सृष्टि के आदि में मानव के कल्याण और मार्ग दर्शन के लिये प्रभु ने जो बौद्धिक ज्ञान का प्रकाश दिया है, उसी का नाम वेद है। वेद अर्थात् ज्ञान, जो ईश्वरीय प्रेरणा का फल है। वेद में ज्ञान और भाषा दोनों हैं, वेद मन्त्रों में जहाँ सर्वमंगल हेतु प्रार्थनाएँ हैं, वहीं दूसरी ओर- **स्वयं यजस्व, स्वयं जुषस्व** कहकर प्रार्थना के साथ पुरुषार्थ का भी आदेश दिया है। सच्ची प्रार्थना के अनुरूप पुरुषार्थ आपको जीवन के चरम लक्ष्य की ओर अग्रसर करेगा।

यत्र सोमः सूयते, यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभितत् पवन्ते।

अर्थात्- जहाँ पुरुषार्थ है और जहाँ यज्ञ में घी की धारा की तरह प्रार्थना उपासना दोनों हैं, वहाँ विजय और सफलता दोनों निश्चित ही होगी।

हमारी बुद्धि जब इस ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित हो जाती है, तब हम समझ पाते हैं कि- **वेदोऽखिलो धर्म मूलम्।** वेद ही सब धर्मों का मूल है।

ईंटें चुन-चुन घर बनाया, लोग कहें घर मेरा,
ना घर मेरा, ना घर तेरा, ये चिड़िया रैन बसेरा।

इन चार दिनों का सदुपयोग कुशाग्र बुद्धि से ही सम्भव है। आज मनुष्य को अंतःप्रवृत्ति और बाह्य प्रवृत्ति पर एक साथ विजय पानी है और इसके लिये विज्ञान के साथ धार्मिक ज्ञान दोनों का विकास आवश्यक है अतः हमें एक साथ ही सच्चा वैज्ञानिक और सच्चा आध्यात्मिक बनना है।

डॉ. मुहम्मद इकबाल ने भारतीय संस्कृति के लिये कहा था-

यूनानो मिस्रो रूमां, सब मिट गए जहां से,
अब तक मगर है बाकी, नामोनिशां हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन, दौरे जमां हमारा।।

यह कुछ बात जो हमारे पास है, वह यही आध्यात्मिक ज्ञान (DIVINE KNOWLEDGE) है। नयी पीढ़ी के बच्चों की बुद्धि प्रखर हो, उसका विकास हो, इसके लिये हमें भी सतत प्रयत्नशील होना होगा। युगों से प्रवाहित वैदिक ज्ञान की गंगा को सम्पूर्ण विश्व में प्रवाहित करना होगा।

लेखिका- डॉ. रोचना भारती
साभार- अमृत मन्थन

■■■

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन-चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन-चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

आत्म निवेदन

आर्य समाज स्थापना के १५० वर्ष

कहाँ खड़ा है आर्यसमाज?

वर्षगाँठ मनाना अत्यन्त प्रसन्नता का विषय होता है। सभी लोग जन्मदिन को बहुविध मनाते हैं, यह परम्परा है। परन्तु यह सार्थक तभी है जब हम आत्मालोचन करते हुए वर्ष भर किये कार्यों की समीक्षा करते हुए, अकरणीय को पीछे छोड़ते हुए करणीय के क्रम में अगर कोई शैथिल्य हो उसे दूर करने का व्रत लेते हुए प्रशस्त पथ पर आगे बढ़ जायँ। संस्थाओं से भी यही अपेक्षा है कि वे भी अपने स्थापना दिवस पर आत्मावलोकन करें। जिस संस्था में ऐसा होता रहता है वही अपने मूल स्वरूप को सुरक्षित रखते हुए मूल उद्देश्यों से भटके बिना जीवन्त बनी रह सकती है। अन्यथा आभासी प्रगति पर आत्ममुग्ध होती हुयी पतनोन्मुख हो जाती हैं। आत्मावलोकन के क्रम में और तद्जनित निष्कर्ष के अवलम्बन के क्रम में कड़वे घूँट भी पीने पड़ें तो उससे बचने का प्रयास न करें वरन् वास्तविकता का सामना करें। बाह्य और आन्तरिक शुद्धि ही अमृत है, यही संस्थाओं के दीर्घ जीवन की कुंजी है।

आर्य समाज के जीवन में एक बड़ा पड़ाव है १५० वर्ष पूरे होना। अतः इस अवसर पर अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक विश्वभर की आर्यसमाजों में अभूतपूर्व उत्साह के सृजन में हम सब जुट जायें, यह तो आवश्यक है ही परन्तु यहाँ कहना चाहूँगा कि हमें उक्त प्रकार से लेखा जोखा भी अवश्य करना चाहिए। यह बात अवश्य रेखांकित कर लेनी चाहिए कि आर्य समाज एक साधारण संगठन नहीं है और महर्षि की इससे अपेक्षाएँ भी असाधारण ही थीं, और यह जिम्मेदारी हम पर है कि हम उन पर खरे साबित हों।

अतः आर्यसमाज को स्वर्णिम सोपान की ओर ले चलने हेतु हमें स्वयं अपने में अथवा संगठन में जो भी सुधार करने हों उन्हें हर कीमत पर करने हेतु सन्नद्ध हो जायँ।

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के सांगठनिक ढाँचे को लोकतंत्रात्मक स्वरूप दिया, यह बात असाधारण है। परन्तु यह बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिए कि यह लोकतंत्र भारतीय राजनीति में प्रचलित लोकतंत्र से बिलकुल अलग है। आर्यसमाज का लोकतंत्र योग्यता सापेक्ष है। इसे समझने के लिए वैदिक शासन पद्धति में व्याख्यायित लोकतंत्र को समझ लेनी चाहिए। इस लोकतंत्र में चुनाव तो है परन्तु जिसे चुना जाय उसकी अर्हताएँ हैं। इन अर्हताओं पर खरे उतरना पहली शर्त है। वेद यहाँ हमारा मार्गदर्शन करता है। उदाहरण के लिए राजा कैसा हो उसका चरित्र कैसा हो, विधायक कैसे हों इस सब का वर्णन हमें वेद में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। (द्रष्टव्य- सत्यार्थ प्रकाश षष्ठ समुल्लास)

इन्द्रो जयाति न परा जयाता अधिराजो राजसु राजयातै।
चर्कृत्य ईड्यो वन्द्यश्चोपसद्यो नमस्यो भवेह।। - अथर्ववेद ६/९८/१

हे मनुष्यों! जो इस मनुष्य के समुदाय में परम ऐश्वर्य का कर्त्ता, शत्रुओं को जीत सके, जो शत्रुओं से पराजित न हो, राजाओं में सर्वोपरि विराजमान, प्रकाशमान हो सभापति होने को अत्यन्त योग्य प्रशंसनीय गुण-कर्म-स्वभाव युक्त, सत्करणीय, समीप जाने और शरण लेने योग्य, सबका माननीय होवे उसी को सभापति राजा करें।

इसी प्रकार सभासदों की भी अर्हता मनु ने निश्चित की है-

सब सभासद और सभापति इन्द्रियों को जीतने अर्थात् अपने वश में रख के सदा धर्म में वरतें, और अधर्म से हटे हटाय रहें इसलिए रात-दिन नियत समय में योगाभ्यास भी करते रहें क्योंकि जो जितेन्द्रिय कि अपनी इन्द्रियों (जो मन प्राण और शरीर प्रजा है, इस) को जीते बिना बाहर की प्रजा को अपने वश में स्थापन करने को समर्थ कभी नहीं हो सकता।

महर्षि ने भी आर्यसमाज में योग्यता सापेक्ष प्रजातंत्र की ही स्थापना की है। आर्य समाज के नियमों व महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों में विश्वास रखने वाले सदाचारी सत्याग्रही, सत्यप्रतिज्ञायुक्त निर्मल व्यक्तित्व के धनी नर नारी ही इसके सदस्य हो सकते हैं। इनमें सभी अर्हताएँ आवश्यक हैं, एक का भी लोप न हो। प्रतीत होता है कि हमसे सबसे बड़ी चूक इस **entry point** पर ही हुयी है। इन अर्हताओं की उपेक्षा की गयी है। संख्या गुणों पर भारी पड़ गयी। वरना क्या उक्त प्रकार के सदस्यों के चलते आज संगठन की यह दुर्दशा होती? कदापि नहीं। दूसरी ओर भारत का लोकतंत्र योग्यता निरपेक्ष है तभी देश की यह दुर्गति हो रही है। न जाने कितने MLA MPs पर अनेकानेक दुष्कर्मों के मुकदमे चल रहे हैं, सदस्य विधान सभाओं में बैठकर पोर्न देख रहे हैं वह भी बेशर्मी से। इनकी दलीय निष्ठा अर्थ पर आश्रित है। कहने को लोकतंत्र है परन्तु इसे भ्रष्ट तंत्र कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। इनसे देश का भला कदापि सम्भव नहीं है। चुनाव का समय आने पर नेता लोग कुछ भी, जब मैं लिख रहा हूँ कुछ भी, तो आशय है कुछ भी, करने को समुद्यत हो जाते हैं। Freebies का नाम आपने सुना होगा। इसे मैं सरकारी, खुले तौर पर वोट खरीदने के लिए दी जाने वाली रिश्वत मानता हूँ। अब आर्यसमाज में भी अत्यन्त refined तरीके से इसका प्रयोग हो रहा है। अत्यन्त बिडम्बना और दुःख की बात यह है कि आज आर्यसमाज का तंत्र भी पूरी तरह पटरी से उतरा हुआ है, Derailed है। निश्चय से उसने भारत के लोकतंत्र के भ्रष्ट तरीकों को पूरी तरह आत्मसात कर लिया है। येन-केन-प्रकारेण वोटरों की संख्या बढ़ाना, और इसके क्या तरीके हो सकते हैं यह पाठ आज के राजनीतिज्ञों से सीख लिया है। तभी तो सभासदों की संख्या वास्तविकता से कहीं ज्यादा भेजी जाती है, सभासद २१ और प्रतिनिधि सभा के चुनाव के लिए प्रतिनिधियों की संख्या ५, यह कैसे हो सकती है? और हम यहाँ तक गिर गए हैं कि फर्जी आर्यसमाजें भी बना लीं जिनका वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं। अब इन फर्जी प्रतिनिधियों के बल पर चुनाव जीते जाते हैं। इसी कारण कई कई सभाएँ बनी हुयीं हैं और संगठन में विभाजन के कारण आर्य समाज में अराजकता व्याप्त है, सत्य राह के व्रती समाज की इस दुर्दशा की क्या इसके संस्थापक ने कभी कल्पना भी की होगी?

प्रारम्भ में एक वर्ष तक आर्यसमाज के नियमों और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को स्वीकार करने वाले सदाचारी नर-नारियों को सहायक सदस्य बनाना, नियम पूर्वक शतांश चन्दा देने और आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में नियमानुसार उपस्थिति, और सदाचार पूर्वक आर्यसमाज के नियमों को जीवन में समाहित करते हुए कथनी और करनी में एक्य भाव रखते हुए न्यूनतम दो वर्ष तक रहे तब उसे सभासद बनाया जाय

और उसे ही मताधिकार हो। इतनी व्यवस्था महर्षि ने की इसके चलते फर्जीवाड़े सम्भव नहीं थे। परन्तु आज हमने इसके परखच्चे उड़ा दिए हैं। जो समाजें ऐसा नहीं कर रहीं वे बधाई की पात्र हैं। परन्तु सभाओं के चुनावों में यही स्थिति देखी गयी है। सभाओं में गुट, समाजों में गुट और आपस में सैकड़ों मुकदमे आर्यसमाज की करुण कथा कह रहे हैं। करोड़ों रुपये इन पर खर्च हो रहे हैं पर निदान आज तक नहीं। क्या महर्षि की जन्म द्विशताब्दी हमें कुछ सकारात्मक प्रेरणा देगी? पता नहीं।

अब आगे आर्यसमाज के १५० वर्ष पूर्ण होने का उत्सव है। आर्य समाज की स्थापना का यह पर्व हम धूमधाम और उत्साह से मनाएँगे ऐसा विश्वास है। परन्तु मात्र १० महीने रह गए हैं इससे पूर्व तो सभी आर्यसमाजों में स्फूर्ति का संचार करना है। प्रत्येक आर्यसमाज की भागीदारी सुनिश्चित करनी है, इस अवसर को लक्ष्य कर प्रत्येक आर्यसमाज न्यूनतम एक कार्यक्रम करे, आर्यत्व का भी संचरण हो, इत्यादि-इत्यादि। इसमें संगठन की महती भूमिका है। परन्तु संगठन? तीन-तीन सभाएँ (अब दो), प्रान्तों में दो दो सभाएँ, सब में अनेक मुकदमे, लगभग हर समाज में झगड़े, सम्पत्तियों के अवैध बेचान, विद्वानों और संस्थाओं में गुटबाजी, संस्थाओं से केवल हित साधन आदि-आदि प्रत्यक्ष ही हैं। आप कहेंगे कि क्या हमारा उजला पक्ष नहीं है हमारा निवेदन है कि क्यों नहीं है। आधुनिक तकनीक को अपनाते हुए अत्याधुनिक प्रचार संसाधन, मीडिया हाउस, यज्ञादि का प्रचार करते हुए सहयोग के प्रकल्प, चलचित्र बनाने में सफलता, सहस्रों गुरुकुल, सहस्रों DAV संस्थान, ऋषि स्मृति स्थलों के कायाकल्प कर उन्हें प्रेरणादायक बनाने का प्रयास, इसकी लिस्ट छोटी नहीं है पर आज हम जो नहीं कर रहे और वह जो आर्यसमाज के मूल स्वरूप को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु आवश्यक है हम उसकी चर्चा केवल ध्यानाकर्षण के विचार से कर रहे हैं आलोचना के लिये नहीं।

हम अपनी शिथिलता और गिरावट के कारण नहीं समझेंगे तो उनका निवारण कैसे होगा? यदि प्रत्येक आर्यसमाज दृढ़ता से आर्यसमाज के नियमों और उपनियमों का श्रद्धापूर्वक पालन करे, फर्जी वोटर जो बनाए उनके नाम काट दे अथवा प्रतिनिधि सभाओं को अपने समाज की नयी संशोधित सच्ची सूची भेजें, फर्जी आर्य समाजें जो हमने ही तो बनायी हैं उनका नाम काटें, जितने नियमानुसार बनते हों उतने ही प्रतिनिधि, सभाओं के निर्वाचन में भेजें तो संगठन में एकता और चरित्रवान नेताओं का नेतृत्व सम्भव हो पायेगा, यह आशा की जा सकती है। कठिन है पर हम माँ आर्यसमाज के १५० वर्ष होने पर अपने स्वार्थों को तिलांजलि देते हुए, देव दयानन्द को अपने समक्ष उपस्थित मानते हुए यह करेंगे तो यह कार्य तनिक भी कठिन नहीं लगेगा, और ऐसा ही मान दोनों सार्वदेशिक के अधिकारी त्याग के नवीन आयाम स्थापित करते हुए एक सभा बना लें तब तो आर्य समाज के १५०वें वर्ष पूरे होने का उत्सव मनाना सार्थक होगा अन्यथा तो रस्म अदायगी ही है।

संगठन की बात संक्षेप में कहने के पश्चात् हम कहना चाहेंगे कि आर्य समाज है क्या? हम यह जन मानस में संप्रेषित करने में असफल रहे हैं। अभी कुछ दिन पूर्व एक जैन सज्जन जो उदयपुर के एक बड़े शिक्षण संस्थान के स्वामी हैं ८० वर्ष के हैं NMCC के अवलोकन हेतु पधारे। सब कुछ देखने के बाद उनकी प्रतिक्रिया थी कि ''अगर यह आर्यसमाज है तो इसका प्रचार क्यों नहीं हुआ। मैं स्वयं ८० वर्ष का हूँ परन्तु आर्यसमाज के इस मानव हितकारी स्वरूप का आज दर्शन कर रहा हूँ।'' बात में दम है, न्यूनता हमारी है।

आर्यों से ऋषि को क्या अपेक्षा थी? महर्षि दयानन्द गर्वपूर्वक आर्यसमाज को राष्ट्र की उन्नति में संलग्न सर्वोपरि संस्था मानते हैं। वे सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में उत्साह पूर्वक लिखते हैं-

''हम और आप को अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिये जैसा आर्यसमाज आर्य्यावर्त्त देश

की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है एक का नहीं।''

''अब विचार करिए कि क्या आज आर्यसमाज देश की उन्नति का सर्वोपरिकारक है?'', ऐसा लोग मानते हैं? सर्वोपरि छोड़िये क्या आज आम और खास जन यह अनुभव करते हैं कि देशोन्नति में आर्यसमाज आज प्रासंगिक भी है? हमारी दृष्टि में उत्तर नकारात्मक है। लोग आर्यसमाज को इस रूप में देखते ही नहीं हैं।

हमारे साथ इसलिए लोग नहीं हैं क्योंकि हम ऋषि की इस उद्घोषणा को स्थापित नहीं कर पाए, समझा नहीं पाए कि 'जैसा आर्यसमाज आर्य्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।'

दूसरों की तो बात क्या करें हमारे परम मित्र, हमारे परिवारीजन भी इस बात पर सम्भवतः विश्वास नहीं करते। सम्भवतः हमें स्वयं भी विश्वास नहीं है। क्योंकि राष्ट्रोन्नति को लक्ष्य मानकर जो त्याग और तपस्या हमें करनी थी उससे हम कोसों दूर हो गए। सुविधाभोगी इस कंटकाकीर्ण मार्ग पर कैसे चले? सत्याग्रह, न्यायप्रियता, पक्षपातरहितता, प्रतिज्ञा पूरी करने हेतु प्रतिबद्धता हमारे जीवन में छलकने चाहिए परन्तु ऐसा नहीं है। महर्षि प्रत्येक आर्य को सत्य प्रतिज्ञ देखना चाहते थे। परन्तु आज अपना वायदा तोड़ने में कोई हिचक नहीं होती। बल्कि हम प्रतिज्ञा का महत्त्व ही नहीं समझते। यूँ ही सतही वायदे करते-करते अपनी विश्वसनीयता खो देते हैं। आपको कटु लगे तो क्षमा करें परन्तु अपने आस पास दृष्टिपात करें तो वास्तविकता समझ आ जायेगी। एक बात और हम अपने स्वार्थ को भी आर्यसमाज की सेवा का खोल चतुरता से पहना देते हैं।

अब हृदय पर हाथ रख हम विचार करें कि क्या आज कोई भी, आर्यसमाज का, राष्ट्र की उन्नति में कोई भाग देखता है? किस राष्ट्रीय विमर्श में आर्यसमाज ने एक समूह के तौर पर अपनी प्रभावशाली भूमिका निभाई है? हैदराबाद सत्याग्रह में निर्णायक भूमिका निभाने के पश्चात् हिन्दी सत्याग्रह के बाद गौ-रक्षा आन्दोलन में आर्यसमाज ने शायद अन्तिम बार अपना प्रभावशाली भाग प्रस्तुत किया। परन्तु उसके बाद? क्या ऋषि के संकेतित सभी कार्य समाप्त हो गए? मुझे लगता है अन्य संस्थाएँ बुनियादी समस्याओं पर और समाज निर्माण क्षेत्र में हमसे ज्यादा बेहतर कार्य कर रही हैं। हाँ वेद पर कोई कार्य नहीं कर रहा और पाखण्ड तथा अंधविश्वास के निवारण हेतु उद्यम की ओर भी किसी की रूचि दिखायी नहीं देती। ये आर्य समाज के प्रमुख कार्य हैं और इन्हीं से हम भी उदासीन हो गए, कैसे काम चलेगा?

शिक्षा के संस्थानों ने ऋषि के मार्ग से किनारा क्यों कर लिया? क्या गौरक्षा की आवश्यकता समाप्त हो गयी? १९६७ के पश्चात् इस दिशा में आर्य समाज ने कुछ किया है क्या? अश्लीलता और पाखण्ड का साम्राज्य कल्पनातीत रूप से चहुँ ओर छा रहा है जिसे न्यायिक आधार भी मिल चुका है। कहीं आर्यसमाज क्रियाशील दिखा?

जिस समय एडल्ट्री से सम्बन्धित प्रावधान को हटाने का निर्णय माननीय सर्वोच्च न्यायलय ने किया यह सुझाव संगठन के समक्ष आया कि कम से कम आर्यसमाज को रिव्यू पिटीशन लगानी चाहिए ताकि कम से कम समाज में यह सन्देश तो जाय कि आर्य समाज इस गलत निर्णय के विरुद्ध न केवल खड़ा है बल्कि सुधार के लिए प्रयासरत भी है। परन्तु

ऐसा कुछ हुआ नहीं। हमारे अपनों से मुकदमे लड़ने से हमें फुर्सत मिले तब तो हम ऐसे विमर्श के भागीदार बनें। हर प्रान्त में दो-दो सभाएँ होकर संगठन की इकाई दुगुनी हो गयी पर यह कार्य किसी से नहीं किया गया। हम कितनी भी अपनी पीठ थपथपा लें गत पाँच दशाब्दियों में हमारे द्वारा किसी भी देश हित के विषय पर ऐसा कुछ नहीं किया गया जिसने राष्ट्र के जन मानस को आर्य समाज के अस्तित्व की ओर भी आकर्षित किया हो। हाँ, हमारी चर्चा विवाह कराने वाली संस्था के रूप में विख्यात है, पर यह हमारी दृष्टि में विडम्बना ही है। आज आर्य समाज शादियाँ करवाए इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। जब हिन्दू विवाह अधिनियम में अन्तर्धार्मिक एवं अन्तर्जातीय विवाह अनुमत नहीं थे तब यह उपयोगी और आवश्यक था, आज नहीं।

अगर कोई भाई हमसे उक्त बातों के सन्दर्भ में सहमत नहीं भी हो तो भी यह विचार तो करना ही होगा कि हमारी स्थिति ऐसी कैसे बनी कि हमें देश के प्रधानमंत्री को पत्र लिख कर याचना करनी पड़ी कि वे महर्षि दयानन्द का नाम अपने लाल किले के भाषण में लें। क्या यह हमारी दयनीय स्थिति का द्योतक नहीं है? जैन सिख आदि वा अन्य संस्थाओं ने कम से कम समूहगत रूप में इतना तो अपने को प्रमुख बना ही लिया है कि उन्हें राजनेताओं के दर पर भटकना नहीं पड़ता बल्कि राजनेता उनके चक्कर लगाते हैं। आपने देखा होगा कि प्रधानमंत्री जी गुरुद्वारे में जाकर रोटियाँ बनाते हैं और अन्य सेवा कार्यों में भाग लेते हैं और वह महर्षि दयानन्द

जो पूरे युगाब्द में अपने जैसा इकलौता व्यक्ति था, जिसने राष्ट्र की हर समस्या का सटीक समाधान दिया था, जो भारत के स्वातंत्र्य समर में प्रेरक शक्ति था, जिसने अस्पृश्यता, जन्मजाति व्यवस्था की असारता और इस पर आधारित विषमता को दूर करने का अचूक समाधान दिया, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ''तर्कऋषि'' को प्रतिष्ठित किया, उनके समस्त अवदान का मूल्यांकन राष्ट्रहित में करें तो उनके समक्ष कोई खड़ा नहीं दिखता, उनके नाम को प्रधानमंत्री के भाषण में जुड़वाने हेतु हमें मिन्नतें करनी पड़ती हैं, राजनीतिक नेताओं का सहारा लेना पड़ता है, यही हमारी तथाकथित प्रभावशीलता का परिचायक है। यहाँ यह बात लिखने योग्य है कि वर्त्तमान प्रधानमंत्री जी स्वयं महर्षि दयानन्द के महत्त्व को भली-भाँति जानते ही नहीं उससे पूर्णतः परिचित हैं परन्तु आर्यसमाज के विशेषकर आज के संगठन के बारे में उनके क्या विचार हैं? विघटित आर्यसमाज को वे किस दृष्टि से देखते हैं यह मुख्य है। माननीय प्रधानमंत्री जी दिल्ली के कार्यक्रम में पधारे वे और सभा धन्यवाद के पात्र हैं क्योंकि प्रधानमंत्री जी का भाषण ऐतिहासिक था, अतुल्य था। वह महर्षि के प्रति श्रद्धा से ओतप्रोत था। अस्तु।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना जब की तो उन्हें पूर्ण आशा थी कि जिस कार्य का शुभारम्भ उन्होंने किया है उसे उनके पश्चात् यह संगठन अर्थात् आर्यसमाज पूरा करेगा। आवश्यक यह था कि इसके सदस्य ऋषि दयानन्द की कोटि के नहीं भी हों तो भी तपे तपाये, तीनों प्रकार की लोकेषणाओं से मुक्त व्यक्तित्व होंगे क्योंकि आर्य समाज का कार्य उन परिस्थितियों में सरल नहीं था। दूसरे हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि सत्य, न्याय और पक्षपातरहितता की कसौटी पर २४ कैरेट के सोने के समान खरे उतरते आर्यों का कार्य फलक अत्यन्त विस्तीर्ण होने के साथ कंटकाकीर्ण भी था।

महर्षि दयानन्द ने गुलामी की जंजीरों में जकड़े इस राष्ट्र के समक्ष आर्यावर्त्त को ग्रसती समस्याओं को ध्यान से देखा था। गम्भीर विचार करने पर निश्चय हुआ कि इन सब का मूल कारण वेदों की शिक्षाओं से दूर हो जाना है। कारण आर्यावर्त्त देश के निवासियों ने वेद का नाम सुना था पर वेदों को देखा पढ़ा नहीं था। पर उसे प्रमाणरूप मानने का आलम यह था कि संस्कृत में वेद के नाम जो कुछ कह दिया जाता था उसे स्वीकार कर लिया जाता था। इस आस्था ने जब उनके अज्ञान से सम्बन्ध बनाया तो मुट्ठी भर मक्कार लोगों ने वेदों के नाम पर जमकर उनका शोषण किया। पार्थिव पूजा को तो मूलशंकर ही स्व-मेधा बुद्धि से अस्वीकार कर चुका था अब वेद के प्रकाश ने मूर्तिपूजा, अवतारवाद, चमत्कारवाद, पाप क्षमा के सिद्धान्त इन सबका निषेध कर दिया। वेद के प्रकाश में दयानन्द भारत को पुनः विश्वगुरु के रूप में अभिषिक्त करने का पथ देख पा रहे थे। अतः समस्त रोगों की एक दवा एक रास्ता उनकी दृष्टि में प्रशस्त था- ''वेदों की और लौटो''। अब हम यह भी कह सकते हैं कि वैदिक शिक्षाओं का अबलम्बन कर राष्ट्र की उन्नति करना आर्यसमाजी को अभीष्ट होना चाहिए। आर्य समाज का छठा नियम भी यही संकेत करता है। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। सच यह है राष्ट्र की उन्नति के बिना संसार की उन्नति संभव नहीं, और व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक उन्नति इसी में समाहित है।

जब आर्यसमाज के प्रथम २८ नियम बनाए तो उनमें भी लिखा है- 'इस समाज में स्वदेश के हितार्थ दो प्रकार की उन्नति के लिए प्रयत्न किया जाएगा एक परमार्थ दूसरी लोक व्यवहार। इन दोनों का शोधन और शुद्धता की उन्नति तथा सब संसार के हित की उन्नति की जावेगी।'

गत दिनों मैं माननीय प्रधानमंत्री जी का एक साक्षात्कार सुन रहा था। उन्होंने अपनी माँ का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने बस यही शिक्षा दी कि 'काम करो बुद्धि से, जीवन जियो शुद्धि से'। मैं सोचने लगा कि माताजी ने कितनी बड़ी बात कितनी सरलता से कह दी। यही आज आर्यसमाज के सदस्यों का मूल मन्त्र होना चाहिए अगर मैं ऐसा कहूँ तो गलत नहीं होगा। बुद्धि से काम करो अर्थात् करना है या नहीं करना इसके लिए तर्क का आश्रय लो। अंधविश्वास, पाखण्ड और समस्त अवैदिक मान्यताओं और कार्यों का निराकरण तर्काश्रित होने से स्वतः हो जाएगा। जीवन जियो शुद्धि से को अगर मैं सदाचार पूर्वक जीवन जीना कहूँ तो गलत नहीं होगा। यही अपेक्षा महर्षि को भी आर्यों से थी। इसीलिए सदस्यों को सदाचार पूर्वक जीवन व्यतीत करना है, यह उन्होंने आर्य समाज के नियमों में डाला। सर्वप्रथम महर्षि ने जो २८ नियम बनाए थे उसमें सदस्यों के बारे में लिखा है कि- 'इस समाज में सत्पुरुष, सत्यनीति और सत्याचरणी हितकारक समाजस्थ लिए जावेंगे।' अर्थात् प्रारम्भिक सदस्य का भी जीवन उक्त गुणों से सुशोभित हो। आज तो समाज के पदाधिकारियों का जीवन भी सत्य के आधार पर टिका हो प्रायः देखने में नहीं आता। सच पूछो तो यही मुख्य कारण है कि पूर्व के आर्यसमाजियों में वर्त्तमान की अपेक्षा उक्त गुणों की विद्यमानता के कारण समाज के अन्य घटकों की आर्यों के प्रति जो श्रद्धा होती थी जो आज देखने में नहीं आती। जिसकी कथनी और करनी में अन्तर होता है वह समाज से आदर प्राप्त नहीं कर सकता।

हमें लगता है कि आर्य समाज के समक्ष समस्त समस्याओं का मूल कारण यह है कि आज के आर्यसमाजियों ने महर्षि ने उनके लिए जो न्यूनतम आदर्श तय किये थे उन्होंने उनकी भी अवहेलना कर दी है। इनकी अनुपालना अपरिहार्य है। अतः आप कितने भी समारोह कर लें अभीष्ट की प्राप्ति तब तक नहीं हो सकती जब तक स्वयं आर्य बनने और परिवार को आर्य बनाने का आन्दोलन नहीं चलाया जाएगा। ऐसा प्रतीत होता है कि आर्यसमाज के सदस्यों के आचार-विचार, भक्ष्याऽभक्ष्य को लेकर पूर्व में भी चिन्ताएँ थीं, ऐसा दयानन्द निर्वाण

अर्द्धशताब्दी और तृतीय आर्य महासम्मेलन में पारित प्रस्तावों को देखकर लगता है जिनमें से एक था- "समाजों के आर्य सभासद, अन्तरंग सदस्य, पदाधिकारी, प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक सभा के सदस्य बनने के लिए सदाचार की मर्यादा स्थिर की जाय। उक्त सदस्यों के लिए निरामिष भोजी होना, मादक द्रव्यों का सेवन न करना, व्यभिचारी न होना तथा घूस व रिश्वत न लेने वाला होना आवश्यक हो।"

यह भी ध्यान रखें कि खण्डन और मण्डन साथ-साथ चलते हैं। अतः अधिकारियों को कठोर निर्णय का भी अभ्यासी होना होगा। संगठन में आप सबके प्रिय नहीं हो सकते हैं। अतः जो आर्य होने की महर्षि निर्दिष्ट कसौटी पर खरा नहीं उतरता उसे बाहर का रास्ता दिखाना होगा। स्मरण रखें स्वामी श्रद्धानन्द जी का वह दृष्टान्त जब आर्य समाज के एक उपप्रधान ने इसलिए त्यागपत्र दे दिया था क्योंकि आर्यसमाज के तृतीय नियम में उन्हें पूर्ण विश्वास नहीं था, यह था एक आदर्श। पर आज आर्यसमाज के सिद्धान्तों की धज्जियाँ उड़ाने वाले मालाओं के अधिकारी हैं तो सोचिये आर्य समाज कैसे बचेगा? यह रास्ता कठिन है, अधिकारियों को कड़े विरोध का सामना करना पड़ेगा पर इसके अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है। सत्य, न्याय, पक्षपातरहितता प्रत्येक आर्य के जीवन में गुम्फित हों। हम विश्लेषण करें कि हम इस कसौटी से कितनी दूर रह गए। दूरी को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करने में जुट जायें। क्या कोई सच्चा आर्य अभिवादन में नमस्ते न करे ऐसा हो सकता है? वह अपने व्हाट्सऐप डीपी में किसी मूर्ति का चित्र लगा सकता है? आर्य समाज का कोई संन्यासी अनेक प्रकार के एप का प्रयोग कर अपने चहरे चमका कर फेसबुक पर डालने में अपना अमूल्य समय बर्बाद करेगा? पर बिडम्बना यह है यह सब हो रहा है। आप कहेंगे छोटी बातें हैं हम कहेंगे इन छोटी-छोटी बातों से ही हम अन्यों की दृष्टि में आंक लिए जाते हैं। एक सज्जन जो अभिवादन के तौर पर जय श्री राम कहते थे और हमसे प्रत्युत्तर में नमस्ते सुनते थे, पूछ बैठे क्या आप या आर्य समाज श्री राम विरोधी हैं? हमने कहा बिलकुल नहीं हम पक्के राम भक्त हैं। फिर इससे पूर्व कि वे आगे कुछ पूछें हमने स्वयं कहा कि देखिए! श्रीराम की जय के नारे हम कभी भी कहीं भी लगा सकते हैं बल्कि हमारे आर्यसमाज में, शोभायात्राओं में हम मुक्त कंठ से ये नारे लगाते हैं, परन्तु ये जयघोष हैं, अभिवादन नहीं। अभिवादन तो नमस्ते कह कर ही हो सकता है। बात उनकी समझ में आ गयी। उनकी हमारे प्रति आत्मीयता और बढ़ गयी।

महर्षि दयानन्द क्रान्तिकारी महापुरुष थे। उन्होंने प्रत्येक वेदोक्त कर्मकाण्ड को तर्काधारित करते हुए उसे, उससे सम्बन्धित समस्त अंधविश्वासजन्य प्रलोभनों से मुक्त कर दिया। परन्तु आर्यजन अपने गुरु की क्रान्तिदृष्टि से मुक्त होने के लिए छटपटाने लगे। उन्हें लगा कि लोगों को प्रत्यक्ष लाभ दिए बिना उनकी प्रभुता जम नहीं सकती। अतः यज्ञों के आगे बड़े-बड़े भारी भरकम नाम लगाये जाने लगे। दूसरों के आरोग्य लाभ के लिए, उसे सद्बुद्धि देने के लिए यज्ञ किये जा रहे हैं. अखण्ड शारद यज्ञ हो रहे हैं। बहुकुण्डीय यज्ञों को लेकर सोशल मीडिया पर युद्ध चल रहा है। यह दावा किया जाने लगा है कि अमुक-अमुक मन्त्रों के द्वारा ICU में भर्ती रोगी को पूर्ण स्वस्थ किया जा सकता है। सच मानिए यह सब आर्यसमाज के वरिष्ठों के द्वारा किया जा रहा है। क्या आप सर पकड़ कर नहीं बैठ जायेंगे जब मैं यह कहूँ कि एक विद्वान् दावा कर गए कि यदि पति-पत्नी के मध्य अनबन हो तो अमुक-अमुक मन्त्रों के पाठ से अनुकूलता हो जायेगी। उन्हीं के शब्दों में-

"यह अनुष्ठान निश्चित रूप से दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने वाला है। पति-पत्नी मिलकर करें तो मनोमालिन्य तुरन्त दूर होकर परस्पर प्रेम में वृद्धि निश्चित है विशेष स्थितियों में उपेक्षित वा दुःखी पति या पत्नी अकेले भी इस अनुष्ठान को निरन्तर कुछ दिनों तक श्रद्धापूर्वक करें और मन्त्रों के अनुसार अपना आचरण करके आशातीत सफलता प्राप्त करें।"

बात वस्तुतः यह है कि बृहत्तर हिन्दू समुदाय में व्याप्त अंधविश्वास दयानन्द के शिष्यों को भी जकड़े जा रहा है और आर्यसमाज मदहोशी के आलम में अपने आसन्न पराभव का आंकलन नहीं कर पा रहा। इन दिनों जिस प्रकार बड़ी तेजी के साथ सैद्धान्तिक क्षरण आर्य समाजियों के मध्य हो रहा है उसकी गम्भीरता की ओर जिम्मेदारों का ध्यान भी गया हो ऐसा कम से कम मुझे नहीं लगता। मुझे कहने दीजिये कि यह सब स्थिति आर्यसमाज के सामान्य वर्ग की नहीं वरन् क्रीमी परत में भी विद्यमान है। छोटे-मोटे विचलन तो छोडिये जिस पार्थिव पूजा की असारता ने मूलशंकर को दयानन्द बना दिया उसमें आकण्ठ डूबे आम आर्यजन नहीं उच्च पदस्थ पदाधिकारियों के वीडियो सोशल मीडिया पर अट्टाहस करते सिद्धान्तों की धज्जियाँ उड़ा रहे हैं, जिन पर किसी प्रकार की कार्यवाही तो कल्पना मात्र ही है। और कुछ नहीं तो ऐसों की उपेक्षा होनी चाहिए वे आर्यसमाज में पूजे जा रहे हैं। इसी कारण आर्य समाज के उच्च अधिकारी अष्टमी पर देवी पूजन कर गर्व से उसकी पोस्ट सोशल मीडिया पर डाल रहे हैं। आर्यसमाज के पुरोहित, आचार्य शिवलिंग पूजन कर वीडियो डाल रहे हैं। अभी दो दिन पहले की बात है, एक ख्यातिनाम वानप्रस्थ ने किसी स्थान पर किसी अवसर पर यज्ञ कराया, वहाँ एक कोने में दीपक, घण्टी से युक्त मंदिर सा था जिसे हवन से पूर्व उस दम्पति ने प्रणाम किया। आदरणीय विदुषी ने इसमें भाग तो नहीं लिया पर ऐसे वीडियो को शेयर करने से क्या सन्देश जाता है? इस पर विचार नहीं किया? क्योंकि सैद्धान्तिक दृढ़ता आज हमारी सोच में प्रमुख नहीं है।

जो नेता राजनीति में चले गए उनके ऐसे ही आचरण के बारे में तो सहज स्वीकार कर लिया गया है कि उन्हें यह सब करना पड़ता है। मुझे नहीं पता कि पूर्व के आर्यनेता जो राजनीति में थे यथा पंडित शिव कुमार शास्त्री, स्वामी रामेश्वरानन्द, पंडित प्रकाशवीर शास्त्री आदि, वे भी सैद्धान्तिक विचलन के पक्षधर थे अथवा नहीं, पर आज सबसे बड़ी चिन्ता की बात है कि ऐसी प्रवृत्तियों की स्वीकार्यता बढ़ गयी है। जब बुराइयों को बुराई मानना ही छोड़ दिया जाय तो समझो वह समाज गर्त में गिरने के समीप है। विचार करें कि क्या दयानन्द ऐसा आर्य समाज चाहते थे?

जिस देवता ने लाखों प्रलोभनों को सत्य सिद्धान्तों के लिए ठुकरा दिया, अनेकों बार प्राण घातक वार सहकर भी इन सिद्धान्तों के विरुद्ध लेशमात्र समझौता भी नहीं किया हम उनके शिष्य कहलाने का दंभ भरने वाले इस सब परिस्थिति में अपनी पीठ थपथपा रहे हैं। ऐसे सभी लोग जान लें कि प्रभाव उसी का पड़ता है जिसकी कथनी और करनी में एक्य हो, अगर हमें आर्यसमाज की वास्तव में चिन्ता है तो आर्यसमाज को सिद्धान्तों की पटरी पर तुरन्त लाना ही होगा इससे पूर्व कि कोई बड़ी दुर्घटना हो जाय। संख्या और गुणात्मकता की प्रतिस्पर्धा में हमें संख्या की चिन्ता तो है पर गुणात्मकता की नहीं। संख्या विस्तार तो आवश्यक है परन्तु वैदिक पथ का अवलम्बन हमारी पहचान है अगर वह विलुप्त अथवा क्षीण हो जाय तो आर्यसमाज बृहत्तर हिन्दू समाज का एक समुदाय मात्र बनकर रह जाएगा, जो हमारी समझ से महर्षि दयानन्द को कभी अभिप्रेत नहीं था।

क्रमशः.......

(यहाँ हमने जो कुछ भी लिखा है वह आर्यसमाज की वर्त्तमान में जो सामान्यतः दशा व दिशा है उसके बारे में लिखा है किसी की भी व्यक्तिगत आलोचना हमारा उद्देश्य नहीं है। अनेक विद्वान्, आर्य नेता, पदाधिकारी व सदस्य ऐसे हो सकते हैं जो ऊपर लिखे के अपवाद हों, वे आर्यसमाज का सौभाग्य हैं, वे कृपया इस लिखे को अपने ऊपर आक्षेप न समझें, बल्कि लेखन का उद्देश्य मन्थन प्रक्रिया को उद्‌बुद्ध करना है, व्यक्तिगत आलोचना नहीं। - अशोक आर्य)

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

क्या वेदों में आतंकवाद है?

[वेदों पर किए प्रत्येक आक्षेप का उत्तर–आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक द्वारा]

{वेद के अध्ययन तथा आधिभौतिक भाष्य से निष्कर्ष निकालते समय यह अवश्य ध्यान रखें कि इन मन्त्रों में जहाँ भी दण्ड का प्रावधान है <u>वह संवैधानिक अधिकारी यथा राजा, सेनापति आदि को दिया गया है न कि आमजन को।</u> यह अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि आतंकवाद में किसी भी गैर विचारधारा रखने वाले व्यक्ति को कोई भी विश्वासी जन आक्रमण कर उसके प्राण ले सकता है। प्रथम व्यवस्था जहाँ राष्ट्र का आवश्यक कर्तव्य है तथा शासक को उसके होने का अर्थ देता है ताकि बाह्य और आन्तरिक शत्रुओं से देश और प्रजाजनों की रक्षा कर सके वहीं द्वितीय मजहब के नाम पर पागलपन और अराजकता है जिसका सभ्य संसार में कदापि स्वागत नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत मन्त्र में भी दुष्टों के ताड़न का अधिकार राजा को ही दिया गया है- सम्पादक}

सुलेमान रिजवी का आक्षेप- यह आक्षेप अथर्ववेद के मन्त्र ४/३१/७ के आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री के अंग्रेजी भाष्य को लेकर किया है।

Atharva Veda 4-31-7 "Let the King [Varuna] and [Manyu] the warm emotion give us the wealth of both kinds & earned and gathered- Let our enemies over whelmed with terror in their mind and spirit and defeated in their design run away. "Tr. Vaidyanath Shastri. Yaska Acharya also writes about terror, Nirukta 10-21 ...These are hemstitch. Like a spear hurled, it inspires terror (among enemies) or courage (among friends)...

यहाँ आक्षेपकर्त्ता का आक्षेप है कि वेद में शत्रुओं को आतंकित करने का विधान है। हम पूर्व में यह समझा चुके हैं कि वैदिक संस्कृति में चोर, डाकू, लुटेरे, दुराचारी और अन्यायकारी लोगों को ही दुष्ट और शत्रु कहा गया है। वस्तुतः ऐसे लोग मानवता के शत्रु होते हैं, जिन्हें अवश्य ही दण्ड देना चाहिए। यहाँ आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री द्वारा किया गया अंग्रेजी अनुवाद भी पूर्व अनुवादों की भाँति अति सामान्य और अस्पष्ट है, परन्तु उनके भाव समझने के लिए आपको वैदिक संस्कृति से निष्पक्षतापूर्वक परिचित होना पड़ेगा और हमारे द्वारा अब तक किये गये समाधान को भी बुद्धि और हृदय में बिठाना पड़ेगा। इस अनुवाद में आपको क्या दोष दिखाई दिया? यह मन्त्र इस प्रकार है-

संसृष्टं धनमुभयं समाकृतमस्मभ्यं धत्तां वरुणश्च मन्युः।
भियो दधाना हृदयेषु शत्रवः पराजितासो अप नि लयन्ताम्॥

- अथर्ववेद ४/३१/७

आक्षेप का उत्तर–

इस मन्त्र पर हम अपने ढंग से विचार करते हैं–

आधिदैविक भाष्य– यह पाठकों के लिए पुस्तक रूप में ही भविष्य में उपलब्ध हो सकेगा।

आधिभौतिक भाष्य– (वरुणः, च, मन्युः) विद्वान् सज्जनों के द्वारा वरणीय, दुष्ट जनों को बाँधने वाला एवं अपराधियों पर क्रोध करने वाला श्रेष्ठ राजा (संसृष्टम्) राष्ट्र में उत्पन्न अन्नादि भोज्य पदार्थ एवं खनिज आदि विभिन्न प्रकार के पदार्थ (समाकृतम्) प्रजा से संगृहीत किये गये कर (उभयम्, धनम्) इन दोनों प्रकार के धनों को (अस्मभ्यम्, धत्ताम्) हम प्रजा जनों को समुचित रूप से प्रदान करे। (पराजितासः, शत्रवः) पराजित हुए दुष्ट शत्रुओं के (हृदयेषु, भियः दधानाः) हृदयों में भय उत्पन्न करता है, जिससे (अप, नि, लयन्ताम्) वे शत्रु दूर भागकर चले जाते हैं, फिर कभी वापिस नहीं लौटते अथवा वे शत्रुता के व्यवहार को ही सर्वथा त्याग देते हैं।

भावार्थ– किसी भी राष्ट्र का राजा विद्वान् सदाचारियों द्वारा ही चुना जाना चाहिए। ऐसे राजा का कर्त्तव्य है कि वह राष्ट्र की सम्पूर्ण सम्पत्ति की वास्तविक स्वामिनी प्रजा को ही समझे और उसे प्रजा के कल्याण के लिए ही व्यय करे। वह राजा अपराधियों एवं राष्ट्र व समाज विरोधी तत्त्वों एवं विदेशी शत्रुओं को यथापराध कठिन दण्ड देवे, जिससे वे राष्ट्र को कोई हानि न पहुँचा सकें।

आध्यात्मिक भाष्य– (वरुणः, च, मन्युः) सबका वरणीय सर्वोत्कृष्ट मन्युरूप परमेश्वर (संसृष्टम्) हमारे क्रियमाण कर्मों (समाकृतम्) एवं संचित कर्मों (उभयम्, धनम्, अस्मभ्यम्, धत्ताम्) दोनों के अनुसार हमें सांसारिक पदार्थ और बुद्धि आदि इन्द्रियाँ प्रदान करता है। वह परमेश्वर नाना प्रकार के पाप कर्मों के प्रति पवित्र हृदय वाले मनुष्यों के हृदयों में भय, लज्जा, शंका आदि उत्पन्न करता है (पराजितासः, शत्रवः) जिससे नाना प्रकार के पापरूप शत्रु पराजित होकर (अप, नि, लयन्ताम्) दूर चले जाते हैं।

भावार्थ– इस सृष्टि में परमेश्वर से बढ़कर कोई भी श्रेष्ठ और उपास्य सत्ता नहीं है। वह ईश्वर अपने न्यायानुसार हमें इस जन्म तथा पूर्व जन्मों में किये गये कर्मों के अनुसार फल प्रदान करता है। जिन मनुष्यों का अन्तःकरण पवित्र और शान्त होता है, उनके हृदय में परमात्मा कोई भी अनुचित कार्य करने की इच्छा करते समय भय, लज्जा और शंका उत्पन्न करता है, जिससे वे पापकर्म करने से बचे रहते हैं। यद्यपि यह भय, लज्जा, शंका सभी मनुष्यों के हृदय में उत्पन्न होती है, परन्तु अविद्यादि दोषों से ग्रस्त दुरात्मा एवं अशान्तात्मा उनको अनुभव नहीं कर पाते। इस कारण हमने यहाँ पवित्र अन्तःकरण वालों में भय, लज्जा, शंका आदि होना कहा है। इस कारण प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह विद्या का अभ्यास करता हुआ उपासना के द्वारा अपने अन्तःकरण को पवित्र और शान्त रखने का प्रयास निरन्तर करता रहे, जिससे परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा उसे कर्त्तव्याकर्त्तव्य का सम्यक् बोध होता रहे।

कहिए सुलेमान रजवी! आपको इस मन्त्र में कहाँ हिंसा दिखाई दी? आप तो अनुवादकों के भी आशय को समझ नहीं पाते और काकवत् चेष्टा करके साफ-सुथरी त्वचा में भी घाव करने का प्रयास करते हैं। आपने जो निरुक्त का उद्धरण दिया है, वह भी केवल अनुवाद ही है। यह किस अंश का अनुवाद है, यह भी आपको ज्ञात है क्या, नहीं कह सकते। चलिये कोई बात नहीं, हम आपको बता देते हैं कि आपने निम्नलिखित अंश के अनुवाद का भाग उद्धृत किया है। निरुक्त का वह अंश इस प्रकार है–

सेनेव सृष्टा। भयं वा बलं वा दधाति।
अस्तुरिव दिद्युत्त्वेषप्रतीका भयप्रतीका।
बलप्रतीका यशःप्रतीकाः।
महाप्रतीका दीप्तप्रतीका वा।

महर्षि यास्क का यह कथन **'सेनेव सृष्टामं दधात्यस्तुर्न दिद्युत्त्वेषप्रतीका'** (ऋग्वेद १/६६/४) का भाष्य है। इसकी व्याख्या सबको समझ में आने वाली

नहीं है। यह पूरा मन्त्र इस प्रकार है-

सेनेव सृष्टामं दधात्यस्तुर्न दिद्युत्त्वेषप्रीका।
यमो ह जातो यमो जनित्वं जारः कनीनां पतिर्जनीनाम्॥

(ऋग्वेद १/६६/४)

यहाँ हम आधिभौतिक भाष्य ऋषि दयानन्द का ही उद्धृत कर रहे हैं, जो इस प्रकार है-

पदार्थः- '(सेनेव) यथा सुशिक्षिता वीरपुरुषाणां विजयकर्त्री सेनास्ति तथाभूतः (सृष्टा) युद्धाय प्रेरिता (अमम्) अपरिपक्वविज्ञानं जनम् (दधाति) धरति (अस्तुः) शत्रूणां विजेतुः प्रक्षेप्तुः (न) इव (दिद्युत्) विच्छेदिका (यमः) नियन्ता (ह) किल (जातः) प्रकटत्वं गतः (यमः) सर्वोपरतः (जनित्वम्) जन्मादिकारणम् (जारः) हन्ता सूर्य्यः (कनीनाम्) कन्येव वर्त्तमानानां रात्रीणां सूर्य्यादीनां वा (पतिः) पालयिता (जनीनाम्) जनानां प्रजानाम्।

भावार्थ- अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्विद्यया सम्यक् प्रयत्नेन यथा सुशिक्षिता सेना शत्रून् विजित्य विजयं करोति। यथा च धनुर्वेदविदः शत्रूणामुपरि शस्त्रास्त्राणि प्रक्षिप्यैतान्विच्छिद्य प्रलयं गमयन्ति तथैवोत्तमः सेनाऽधिपतिः सर्वदुःखानि नाशयतीति बोद्धव्यम्।

पदार्थ- हे मनुष्यो! तुम लोग जो सेनापति (यमः) नियम करने वाला (जातः) प्रकट (यमः) सर्वथा नियमकर्त्ता (जनित्वम्) जन्मादि कारणयुक्त (कनीनाम्) कन्यावत् वर्त्तमान रात्रियों के (जारः) आयु का हननकर्त्ता सूर्य के समान (जनीनाम्) उत्पन्न हुई प्रजाओं का (पतिः) पालनकर्त्ता (सृष्टा) प्रेरित (सेनेव) अच्छी शिक्षा को प्राप्त हुई वीर पुरुषों की विजय करने वाली सेना के समान (अस्तुः) शत्रुओं के ऊपर अस्त्र-शस्त्र चलाने वाले (त्वेषप्रतीका) दीप्तियों के प्रतीति करने वाले (दिद्युन्न) बिजुली के समान (अमम्) अपरिपक्व विज्ञानयुक्त जन को (दधाति) धारण करता है, उसका सेवन करो।

भावार्थ- इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि विद्या से अच्छे प्रयत्न द्वारा जैसे की हुई उत्तम शिक्षा से सिद्ध की हुई सेना शत्रुओं को जीत कर विजय करती है, जैसे धनुर्वेद के जानने वाले विद्वान् लोग शत्रुओं के ऊपर शस्त्र-अस्त्रों को छोड़ उनका छेदन करके भगा देते हैं, वैसे उत्तम सेनापति सब दुःखों का नाश करता है, ऐसा तुम जानो।

अब हम इसका आध्यात्मिक भाष्य प्रस्तुत करते हैं-

आध्यात्मिक भाष्य- (सृष्टा, त्वेषप्रतीका, सेना, इव) {भयप्रतीका, बलप्रतीका, यशःप्रतीका, महाप्रतीका दीप्तप्रतीका} कुशलतापूर्वक सुसज्जित बल, भय और तेजस्विता की प्रतीका सेना के समान (यमः, ह, जातः) जितेन्द्रियता आदि गुणों से प्रसिद्ध विद्वान् (अमम्, दधाति) {अमः= गृहम् (म.द.ऋ.भा. ५.५६.३), अमं भयं बलं वा (निरु.१०.२१), अमा गृहनाम (निघं. ३.४)} सबका आश्रयदाता एवं सभी बलों के देने वाले परमात्मा को धारण करता है।

(अस्तुः, न, दिद्युत्) {अस्तुः= शत्रुनाम विजेतुः प्रक्षेप्तुः (ऋषि दया.भा.)} वह योगनिष्ठ विद्वान् शत्रुओं को जीतने वाली सेना के समान अपने सभी दोषों को काट डालता है। (यमः, जनित्वम्, जारः) वह नियतात्मा योगी अपने जन्म-मरण के कारणरूप अविवेक को अपनी साधना के द्वारा निरन्तर जीर्ण करता जाता है। (कनीनाम्, जनीनाम्, पतिः) {कनीनः= कनी दीप्तिकान्तिगतिषु (भ्वा.) धातोर्बाहु. ईनप्रत्ययः (वैदिक-कोष)} वह योगी ब्रह्मतेज का पान करता हुआ मनुष्य मात्र का अपने सदुपदेश के द्वारा संरक्षण करता है।

भावार्थ- जिस प्रकार से शत्रु को अपने बल और तेजस्विता से भयभीत करने वाली सेना शत्रु को दूर भगा देती है, उसी प्रकार से योगनिष्ठ विद्वान् अपने

सभी दोषों और पूर्वजन्म के संस्कारों को दग्धबीज करने में समर्थ होता है। ऐसा समर्थ वह योगी परब्रह्म परमात्मा के ज्ञान और आनन्द को धारण करता हुआ परम लोक को प्राप्त होता है। ऐसा योगी पुरुष अपने सदुपदेश के द्वारा निरन्तर सभी प्राणियों के उपकार में भी संलग्न रहता है। बिना परोपकार के कोई भी व्यक्ति योगी नहीं बन सकता। जो कोई समाज से दान वा भिक्षा आदि प्राप्त करके अपना जीवनयापन करते हैं, वे समाज के ऋणी होते हैं और उस ऋण को चुकाए बिना यदि कोई केवल आत्मकल्याण हेतु सदैव योगसाधना ही करता रहता है, उसका कभी योग सिद्ध नहीं हो सकता। इसलिए मुमुक्षु जनों को चाहिए कि समाज के ऋण से उऋण होने के लिए वे निरन्तर अपने सदुपदेश के द्वारा प्राणिमात्र का कल्याण करने का प्रयास करता रहें।

इस प्रकरण पर क्या कोई बुद्धिमान् व्यक्ति आपत्ति कर सकता है?

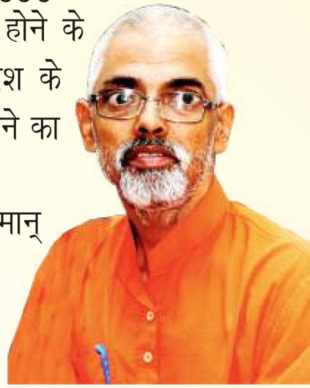

लेखक- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, वेद विज्ञान मन्दिर
भागलभीम, भीनमाल
चलभाष- ९४१४८३४४०३

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

Worth visit to this place where Shri Swami Dayanand wrote Satyarth Prakash. The organizer took serious efforts to make reachable to common Indian. I urge each Udaipur lovers/visitors to MUST visit for 1hr and enlighten the great history and culture of India to their sons/daughters and family.

- Mridul G

The ambience at the entrance only makes it feel how will it feel inside and that was undoubtedly a great experience to see the inside which was full of in depth thoughtful innovation to bring the Satyarth Prakash and the noble deeds of Swami Dayanand Saraswati....Jai Shree Ram, Jai Shree Yogeshwar Krishna ...

- JKA

Awesome place, just give it a try you won't be disappointed, that's my guaranty to you guys, everything is there, humble and respected people, and you will get knowledge at the free of cost . I definitely recommend you please visit this as you have 1 hr time.

- Vandana A

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

BHIM UPI

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

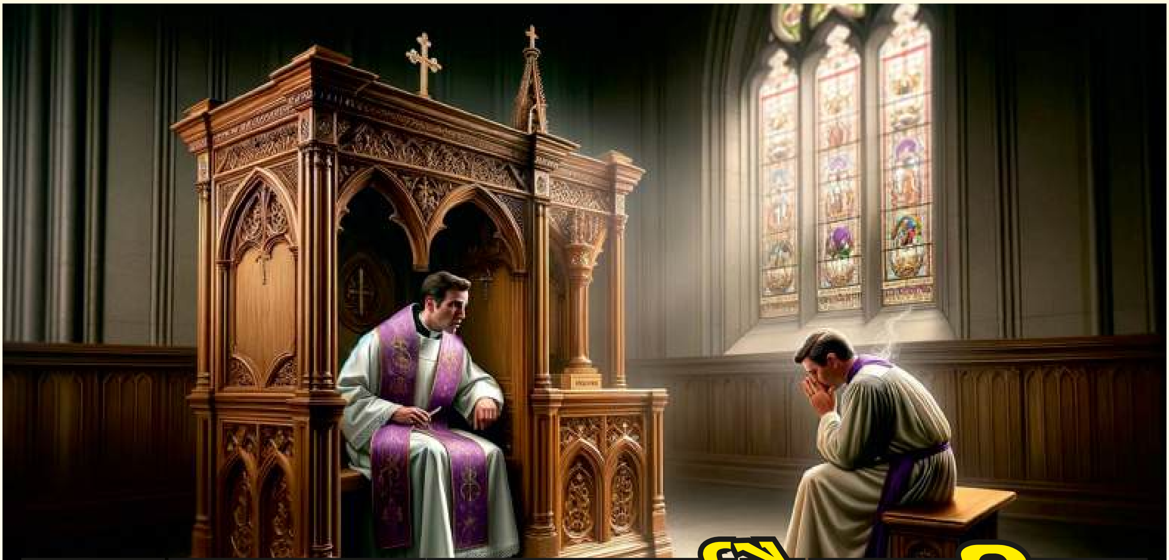

एक शाश्वत तपश्चर्या है प्रायश्चित

प्रेमचन्द ने कहा है कि पश्चाताप के कड़वे फल कभी न कभी सभी को चखने पड़ते हैं। प्रश्न उठता है कि पश्चाताप क्या है? पश्चाताप का अर्थ है पछताना। पश्चाताप वह मानसिक पीड़ा अथवा चिंता की स्थिति है जो किसी अनुचित काम को करने के उपरान्त उसके भयंकर परिणाम या अनौचित्य का ध्यान करने अथवा किसी उचित या उपयोगी कार्य को न करने के कारण उत्पन्न होती है। पश्चाताप एक तरह से अपनी गलती की स्वीकृति की तरह होता है और जब तक हम उस गलती को सुधार नहीं लेते हमें चैन नहीं मिलता। और उस सुधार का नाम है प्रायश्चित। पश्चाताप एक तरह से निदान अथवा डायग्नोसिस की तरह से होता है और प्रायश्चित उपचार की तरह होता है। शास्त्रों के अनुसार प्रायश्चित वह कार्य अथवा प्रक्रिया है जिसके करने से मनुष्य पाप अथवा अधर्म से छूट जाता है। पाप और पुण्य दोनों हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव डालते हैं। सरल शब्दों में कहें तो दूसरों को किसी भी रूप में पीड़ा देना या कष्ट पहुँचाना ही वास्तव में पाप है और ऐसे किसी भी पाप का परिमार्जन ही प्रायश्चित है।

क्यों चखने पड़ते हैं पश्चाताप के कड़वे फल सभी को कभी न कभी? मनुष्य गलतियों का पुतला है अतः गलतियाँ होना अथवा हमारे व्यवहार से दूसरों को पीड़ा पहुँचना स्वाभाविक है। गलतियाँ होंगी तो कम से कम अच्छे लोगों को पश्चाताप भी होगा ही। यदि हम पश्चाताप की आग में जलते रहते हैं लेकिन उसके प्रायश्चित अथवा परिमार्जन के लिए कुछ नहीं करते तो ऐसा पश्चाताप मात्र ढोंग और दिखावा होगा। यदि हम किसी को पीड़ा अथवा चोट पहुँचाते हैं, किसी का आर्थिक शोषण करते हैं अथवा हमारी वजह से किसी का जीवन समाप्त हो जाता है तो ऐसी अवस्था में राज्य का कानून अपना काम करेगा। ये सजा और जुर्माना प्रायश्चित नहीं कहला सकता। किसी भी अपराध अथवा गलती के लिए जब हम स्वयं को भी दण्ड देते हैं और भविष्य में किसी भी दशा में उस प्रकार के किसी भी कार्य को न करने का संकल्प लेते और निभाते हैं तभी प्रायश्चित पूर्ण होता है और वो भी आंशिक रूप से।

प्रायश्चित की क्या आवश्यकता है और वास्तविक प्रायश्चित क्या है? प्रायश्चित वास्तव में एक उपचार प्रक्रिया है जिससे हम किसी भी प्रकार के पश्चाताप की पीड़ा के प्रभाव से मुक्त हो जाते हैं। वास्तविक प्रायश्चित एक विशुद्ध मानसिक प्रक्रिया है। जब तक हम अपनी गलती नहीं स्वीकार करेंगे उसका सुधार

करने की ओर कैसे अग्रसर होंगे? इसके लिए अनिवार्य है कि हम अपनी मानसिकता को ऐसी बनाएँ जिससे भविष्य में कभी अधर्म अथवा अपराध न हों। हम हर छोटी से छोटी बात को देखें और जो भी गलत लगे उसे अपनी मन रूपी स्लेट से पौंछते रहें। जो सही प्रतीत हो उसे बार-बार लिखते रहें। प्रायश्चित वास्तव में जीवनभर चलने वाली एक सतत तपश्चर्या है। यदि हम इसे अपने जीवन में लागू नहीं करेंगे तो किसी दिन बड़ी गलती अवश्य कर बैठेंगे। सतत तपश्चर्या ही सबसे कठिन होती है लेकिन जो प्रायश्चित के महत्त्व को जानते हैं वे सतत तपश्चर्या को जीवन में सबसे अधिक महत्त्व देते हैं क्योंकि किसी भयंकर भूल का पूर्ण प्रायश्चित सम्भव ही नहीं। यदि हमारी गलती की वजह से किसी की जीवनलीला समाप्त हो जाती है तो बतलाइए प्रायश्चित कैसे सम्भव है? क्या हम किसी भी तरह से घटनाओं को वापस उसी अवस्था में ला सकते हैं?

प्रायश्चित का अर्थ है समग्र उपचार अथवा होलिस्टिक हीलिंग। यदि हम गलती, अपराध, पाप अथवा अधर्म करते हैं तो बाह्य दण्ड पर्याप्त नहीं। जब हम उसे स्वीकार कर स्वयं भी अपने आपको दण्ड देते हैं तभी प्रायश्चित की प्रक्रिया पूर्ण होती है। स्वयं को स्वयं कैसे दण्ड दें ये बहुत जटिल है। इसी जटिलता ने प्रायश्चित की प्रक्रिया को लूटतंत्र में बदल दिया है। भगवतीचरण वर्मा की कहानी प्रायश्चित इस लूटतंत्र को बेनकाब करती है। वास्तविकता ये है कि हम अपराध करने के बावजूद कानून से बचने का भरसक प्रयास करते हैं। हम अपने अपराध अथवा गलतियों को जस्टीफाई करने में लग जाते हैं। यदि हमसे कोई बड़ी गलती अथवा अपराध हो जाता है तो प्रायश्चित का पहला कदम उसे स्वीकार करना ही है। चर्च में पादरी के समक्ष अपने गुनाहों की स्वीकृति अथवा कंफेशन भी यही है। लेकिन मात्र अपराध स्वीकार करने से ही बात नहीं बनती। उस अपराध के दुष्प्रभाव को भी कम करना अनिवार्य है। यदि किसी का आर्थिक नुकसान हो जाता है तो उसकी क्षतिपूर्ति भी अनिवार्य है। लेकिन मात्र क्षतिपूर्ति भी प्रायश्चित नहीं। कई ऐसी स्थितियाँ होती हैं जिनकी क्षतिपूर्ति हो ही नहीं सकती।

आज जिसे हम प्रायश्चित कहते हैं वो वास्तव में एक आंशिक क्षतिपूर्ति मात्र है। इससे हमारा पाप न कम

होता है न मिटता है। पाप अपना प्रभाव छोड़ता है तो पुण्य भी अपना प्रभाव छोड़ता है। **पाप के प्रभाव को नष्ट करने के लिए हम व्रत अथवा दान अथवा कर्मकाण्डादि जो उपाय करते हैं उससे हमारा पाप कभी नहीं मिट सकता लेकिन कुछ अच्छा करके हम संतुष्टि का अनुभव करते हैं।** पाप के प्रभाव की स्वीकृति के कारण जो मानसिक पीड़ा होती है वो हमें चैन से नहीं बैठने देती इसीलिए हम अपने चैन की खातिर ही प्रायश्चित करने को विवश होते हैं। लेकिन हमें चैन नहीं मिल पाता क्योंकि हमारा प्रायश्चित नाम मात्र का अथवा दिखावे के लिए होता है। हम प्रायः छोटी-छोटी निरर्थक घटनाओं के लिए प्रायश्चित करने का नाटक करते रहते हैं लेकिन जहाँ सही में प्रायश्चित करने की आवश्यकता होती है वहाँ चुप रह जाते हैं अथवा बार-बार किसी गलती को दोहराते रहते हैं और पश्चाताप करने का ढोंग करते रहते हैं। एक शेर याद आ रहा है-

शब को मय खूब सी पी, सुबह को तौबा कर ली,
रिंद के रिंद रहे हाथ से, जन्नत न गइ।

रोज रात को शराब पी लेते हैं और सुबह तौबा कर लेते हैं क्योंकि कहा गया है कि गुनाहों से तौबा करने वाले को जन्नत नसीब होता है। प्रायश्चित दिखावे की चीज नहीं होती लेकिन हम सभी प्रायः प्रायश्चित करने का दिखावा ही करते हैं। या फिर हमारा

प्रायश्चित डर की वजह से होता है। डर ये है कि प्रायश्चित नहीं किया तो हमें मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी, स्वर्ग अथवा जन्नत में जगह नहीं मिलेगी। दूसरे अधर्म अथवा अपराध चण्डीगढ़ अथवा दिल्ली में किया और उसके प्रायश्चित के लिए हरिद्वार जाकर गंगा में डुबकियाँ लगा रहे हैं। चार धाम की यात्रा कर रहे हैं। पण्डे-पुजारियों को भेंट चढ़ा रहे हैं। अनुष्ठान करवा रहे हैं। व्रत व दान कर रहे हैं। जिसका दिल दुखाया है या जिसके साथ कपट किया है उसे तो भूल ही गए। यदि प्रायश्चित नाम की कोई प्रक्रिया है तो यही है कि सजा भुगतने के साथ-साथ जिसके हृदय को जलाया है उसके हृदय पर मरहम लगाएँ और तत्क्षण ही लगाएँ और प्रण करें कि ऐसी गलती फिर कभी नहीं होगी।

सीताराम गुप्ता
ए.डी. १०६ सी., पीतमपुरा, दिल्ली - ११००३४
चलभाष- ०९५५५६२२३२३
Email : srgupta54@yahoo-co-in

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 264/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफीस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलभ सकती है।

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें। -सम्पादक

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर

विश्वशान्ति की समस्या और उसका स्थायी समाधान एक रचनात्मक प्रोग्राम

गतांक से आगे........

आदर्श आचरण संहिता

इस आचरण संहिता का प्रमुख भाग कर्मफल मीमांसा कहलाता है और वह इस प्रकार है-

दर्शनकार की व्यवस्था में आयु जाति तथा भोग मनुष्य को पूर्वजन्म के आधार पर ही मिलते हैं (यहाँ जाति शब्द का तात्पर्य योनि, पशु, पक्षी, पतंग, मनुष्य आदि से है)। भोग दो प्रकार के हैं- एक सुखद तथा दूसरा दुःखद। दुःखद भोग में हम किसी प्रकार का सहयोग प्राप्त कर ही नहीं सकते। कौन होगा ऐसा जो मेरे ५० बेंत के दण्ड में कुछ स्वयं सहन कर मेरा सहयोग करना चाहेगा? किन्तु सुखद भोग में हम किसी को भी अपना भागीदार बना सकते हैं और कोई भी भागीदार हो सकता है। उदाहरणार्थ मेरे पास भोग के पचास आम हैं। हम सब स्वयं भी खा सकते हैं और इनमें से आवश्यकतानुसार तथा इच्छानुसार चार आम खा शेष ४६ आम किसी को भी खाने को दे सकते हैं। स्वयं सम्पूर्ण खा जाने पर भोग मूलतया आमों के भोग के द्वारा अपने लिए नूतन कर्म का सृजन कर लेते हैं जो हमें पुनः इस जन्म अथवा दूसरे जन्म में मिलेगा। इस दर्शन के प्रचार और प्रसार में प्रत्येक व्यक्ति खाने के चक्कर से निकल कर खिलाने की होड़ में खड़ा हो जायेगा। तब विश्व में अशान्ति का प्रश्न ही नहीं रहेगा और स्थायी शान्ति स्वतः उपस्थित हो जायेगी। आज हम व्यवहार पक्ष में ऐसा मानते हैं कि 'Foolish man invite and wise man eat' मूर्ख व्यक्ति खिलाते हैं और बुद्धिमान व्यक्ति खाते है। किन्तु स्थिति तब बदल जायेगी और नई लोकोक्ति तैयार होगी। 'Wise man invite and foolish man eat' बुद्धिमान व्यक्ति खिलाते हैं और मूर्ख व्यक्ति खाते हैं। परिणामस्वरूप समस्त मानव समाज एक परिवार की संज्ञा को प्राप्त हो जावेगा। जिसका प्रत्येक सदस्य कम से कम उपयोग करके अधिक से अधिक दूसरों के उपभोग निमित्त छोड़ने में अपने सम्पूर्ण विवेक और कौशल को लगा देगा जिससे विश्व शान्ति का महर्षि कल्पित रूप साकार हो उठेगा।

विश्व शान्ति का आधार

अपनी आवश्यकता से अधिक पर अपना अधिकार माँगना सामाजिक हिंसा है। इससे बचना ही विश्व शान्ति का एकमात्र हल है। इसका विश्लेषण इस प्रकार है-

सम्पूर्ण भोग पर स्वामित्व समाज का हो, व्यक्ति का नहीं। व्यक्ति से योग्यतानुसार कार्य लिया जावे और आवश्यकतानुसार फल दिया जावे। यह साम्यवादी व्यवस्था है जिसके आधुनिक विचारक कार्ल मार्क्स थे। किन्तु इस व्यवस्था में एक बहुत बड़ा दोष उत्पन्न होना स्वाभाविक था जिसे रोका नहीं जा सका। वह था व्यक्ति के विकास का ठप्प हो जाना। जब प्रत्येक को आवश्यकतानुसार मिलेगा ही तो व्यक्ति में नूतन चिन्तन और अन्वेषण की प्रवृत्ति कुंठित हो जायेगी और इस प्रकार बुद्धिजीवियों का क्रमशः ह्रास होने लगेगा जो समाज को सौन्दर्यविहीन कर देगा। इस

दिशा में परमेश्वर प्रदत्त आचरण संहिता वेद का हमें सहाय लेना पड़ेगा। यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के प्रथम मंत्र में कहते हैं कि- 'यहाँ किसी भी भोक्ता को उसके पास उपस्थित स्वपरिश्रम अथवा पुरुषार्थ से जड़ अथवा चेतन किसी भी प्रकार के भोग के स्वामित्व के अधिकार से पृथक् रखा गया है। वह इन सबको प्रयोग करने में सर्वथा स्वतंत्र होता हुआ भी इनका भोक्ता तो है किन्तु स्वामी नहीं। क्योंकि संसार के कण-कण में समाया हुआ क्षण-क्षण में उपस्थित परमेश्वर ही इसका स्वामी है जिसने यह जगत् जीवात्मा के शुभाशुभ कर्मों का यथावत् फल देने निमित्त 'भुगतान भवन' के रूप में बनाया और इसमें उपस्थित रहकर इसका संचालन कर रहा है। यह विश्व मानो एक रंगमंच है जिसका निर्देशक परब्रह्म परमेश्वर है और अनन्त जीवात्माएँ उसके द्वारा प्रदत्त अपने-अपने पात्र का अभिनय कर रहे हैं। इस सबको वह उनके द्वारा सम्पन्न किए जाने वाले अभिनय के अनुकूल सजाता और संवारता है। यही उसका अद्वितीय कौशल और चातुर्य है। उदाहरण के लिए राम और श्याम दो जुड़वाँ भाई एक नाटक में अभिनय करते हैं। एक को राजा का अभिनय करना है तो दूसरे को रंक का। नाटक का निर्देशक दोनों को उनके पद के निर्वाह निमित्त पृथक्-पृथक् वस्त्र आभूषण इत्यादि से अलंकृत करता और उनको रंगमंच पर निश्चित समय से उतारता तथा नाटक की समाप्ति पर उनसे वह सब अलंकार की वस्तुएँ वापस लेकर उन्हें उनके निज परिधानों के साथ छोड़ देता है। निर्देशक की कार्यकुशलता उन्हें यथावत् (उनके द्वारा किए जाने वाले अभिनय हेतु) रंगमंच पर जहाँ उतारने में है, वही रंगमंच पर उतरने वाले कलाकारों का उन्हें प्रदत्त अभिनय को यथावत् निभाने की दिशा में पूर्ण पुरुषार्थ करने में है। अपने पद का शुद्ध और सहज निर्वाह करने वाले पात्र को पारितोषिक मिलता है। उस समय यह विवाद का विषय नहीं होता कि रूपक राजा का था अथवा रंक का। क्योंकि इनमें वास्तव में यथार्थ में न कोई राजा था और न कोई रंक। जब उपभोक्ता को स्वामित्व के मोह से छुड़ा दिया जावेगा तो वह दूसरे उपभोक्ताओं के भोग को देखकर ईर्ष्या और द्वेष से पीड़ित नहीं होगा। इसका कारण तो केवल स्वामित्व की विवादास्पद घोषणा ही है। उदाहरण के लिए साईकिल पर चढ़ने वाला, मोटर पर चढ़कर जाते हुए यात्री को देखकर क्यों दुःखी होगा जब इनमें कोई भी किसी का स्वामी नहीं है। न साईकिल तथाकथित साईकिल वाले की है और न मोटर तथाकथित मोटर वाले की है। दोनों के स्वामी परब्रह्म परमेश्वर हैं। और उपभोक्ता की अवधि के समापन पर दोनों से यह भोग की वस्तुएँ वापस रखवा ली जावेंगी। यही दर्शन संसार में भोग और भोक्ता के मध्य उपस्थित व्यवधान का समाधान है। यही विश्व शान्ति का आधार है जिसका प्रचार एवं प्रसार होना चाहिए।

दूसरी स्थिति में जिसमें मत-पन्थों और सम्प्रदाय के आधार पर मानव समाज अनेकानेक भागों में विभक्त, घृणा और द्वेष का शिकार हो चुका है जिससे अशान्ति स्वाभाविक है। अनुयायियों की संख्या वृद्धि ही धार्मिक स्पर्द्धा का उद्देश्य है। यह एक निर्विवाद सत्य है कि संख्या और गुण एक ही समय में एक ही स्थान पर उपस्थित नहीं किए जा सकते। यदि हम गुणों पर बल देंगे तो संख्या में कमी होना स्वाभाविक है और इसी प्रकार हम संख्या पर बल देंगे तो गुणों का ह्रास होना स्वाभाविक है। गंगोत्री में पवित्र जाह्नवी का जल शुद्धतम, पाट अथवा चौड़ाई अल्पतम और धारा तीव्रतम है, वही गंगा अपने विलय स्थान समुद्र के पास गंगासागर में जाकर जल को अशुद्धतम (नमकीन और खारा पानी न पीने योग्य पानी) धारा को शांततम तथा पाट और चौड़ाई को वृहत्तम कर लेती है। धर्म में गुणों को एकत्रित और अर्जित करने का उपदेश है, इसमें मत-पन्थ एवं सम्प्रदाय के विवादग्रस्त लिंग अर्थात् चिह्न का झगड़ा नहीं इस कारण संख्या वृद्धि के होड़ का प्रश्न ही नहीं उठता।

लेखक- महात्मा आर्यभिक्षु
साभार- बोधामृत

आर्य जगत् का सौभाग्योदय

आज मानव भौतिक ऐश्वर्य की चमक-दमक से आवृत्त हुआ, अपने परम लक्ष्य से विरत् है। सत्य मार्ग पर अग्रसर होने हेतु, समस्त भौतिक ऐश्वर्यों को ठोकर मार देने वाले विरले ही होते हैं। ऐसे ही एक महनीय व्यक्तित्व के रूप में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के आजीवन अध्यक्ष व राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के

तत्कालीन प्रधान पूज्य स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती के दर्शन हमें होते हैं, जिन्होंने जिस प्रकार स्वनामधन्य भामाशाह ने कभी 'इदं राष्ट्राय इदं न मम' कहकर अपना सब कुछ राष्ट्र हित में न्यौछावर कर दिया था, जिस प्रकार प्रातः स्मरणीय अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने वैदिक मार्ग पर जन-जन को ले जाने की प्रतिज्ञा की पूर्ति में सर्वमेध यज्ञ किया था, उसी प्रकार वेद ज्ञान के प्रचारार्थ व महर्षि दयानन्द जी के कालजयी ग्रन्थ रत्न सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को भूमण्डल में विस्तरित करने का प्रण लेकर, अपनी करोड़ों की सम्पत्ति- व्यवसाय को ठोकर मार कर, उन विरले महापुरुषों की सूची में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित करवा लिया है।

पूज्य स्वामी जी का पूर्व नाम हनुमान प्रसाद चौधरी था। वे पक्के पौराणिक थे। आर्यजनों के निकट ऐसे दानवीर, उदारमना, करोड़पति उद्योगी के जीवन में एक मोड़ का आना, जब आपका सम्पर्क ८० के दशक में आर्य विचारधारा से हुआ, सौभाग्य का सूचक ही सिद्ध हुआ। श्री हनुमान प्रसाद चौधरी पर जैसे-जैसे महर्षि दयानन्द का रंग चढ़ता गया, पौराणिक बाना उतरता गया। अब वह दिन दूर नहीं था, जब इस महापुरुष को जीवन के सत्य पथ का अनुसंधान कर वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत होना था। महर्षि दयानन्द की विचारधारा के संसर्ग ने इस कुशाग्र बुद्धि, चिन्तनशील मनीषी के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया व एक दृढ़ निष्ठावान, आर्य व्यक्तित्व हमारे समक्ष था। महर्षि दयानन्द ने मानव जीवन की आचार संहिता, अपने सम्पूर्ण अध्ययन, चिंतन, मनन के सार, सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन उदयपुर के गुलाब बाग में अवस्थित जिस नवलखा महल में लगभग साढे छः मास विराज कर सम्पूर्ण किया, जहाँ अपनी उत्तराधिकारिणी सभा श्रीमती परोपकारिणी सभा की स्थापना कर मेवाड़ की शासकीय कचहरी में रजिस्टर्ड कराया, उस ऐतिहासिक पावन स्थल की दुर्दशा देखकर श्री चौधरी जी द्रवित हो गये। यह भवन राजकीय आबकारी विभाग के चलते शराब का गोदाम बन चुका था। कभी मेवाड़ नरेश महाराणा सज्जनसिंह जी का यह राजकीय शोभित अतिथिगृह अब जीर्ण-शीर्ण हो चुका था। आर्यजन चाहते थे कि यह भवन आर्यों को मिले, इस हेतु छुट-पुट प्रयास भी हुए पर सफलता अभी कोसों दूर थी। ऐसे में सौभाग्य से, दृढ़ निश्चयी श्री चौधरी जी ने राजस्थान आ. प्र. सभा के तत्कालीन मंत्री पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती के साथ प्रयास कर इस भवन को प्राप्त कर इसे महर्षि जी की स्मृति में एक अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक व वेद-प्रचार का सशक्त केन्द्र बनाने के निश्चय को अपना जीवन ध्येय बना लिया और अपने निधन (२००४) तक न्यास के आजीवन अध्यक्ष के रूप में इस स्मारक को वह दिशा प्रदान कर दी कि आज यह विश्वभर में आर्यजगत् के सर्वाधिक अनूठे व लोकप्रिय स्मारक के रूप में विख्यात है। आपका जीवन प्रत्येक आर्य के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

आएँ हम सब २३ जुलाई उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर उनके पथ का अनुसरण करने हेतु संकल्पित हों।

– अशोक आर्य
वर्तमान अध्यक्ष–श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर

अर्धावभेदक (माइग्रेन)

सिर दर्द के अनेक प्रकार हैं, जिनमें माइग्रेन का प्रमुख स्थान है। इसमें भृकुटी, शंख, कर्ण, नेत्र व ललाट के आधे भाग में (सिर के एक ओर) तीव्र शूल होता है। जिसमें शस्त्रप्रहारवत् या आरी से काटने के समान तेज दर्द होता है। अधिक बढ़ने या ज्यादा दिन तक रहने पर श्रवण शक्ति व दृष्टि का नाश हो जाता है। यह बार-बार होने वाला रोग है। कभी-कभी यह हल्का व सहन करने योग्य होता है और कभी यह बहुत तेज व असहनीय होता है।

कारण

रूक्ष आहार, अध्यशन (पूर्व में खाये आहार के पचने से पहले पुनः खाना), पूर्व दिशा की हवा, दिन में सोना, रात्रि जागरण, अति मैथुन, वेग धारण (मल-मूत्र-अपानवायु, भूख, प्यास, छींक आदि के वेगों को रोकना), अति व्यायाम, अति शीत व अति उष्णता के सेवन से प्रकुपित वात-कफ के द्वारा अवरुद्ध होकर मन्या, भृकुटी, शंख प्रदेश और ललाट के कफ या सोमतत्व को सुखाकर सूची वेधवत् पीड़ा उत्पन्न करता है।

अर्वाचीन मतानुसार काफी वैज्ञानिक शोधों के बाद भी माइग्रेन के कारणों का स्पष्ट पता नहीं लग सका है। कुछ प्रमुख सम्भावनाएँ निम्न प्रकार हैं।-

- ☞ मस्तिष्क की धमनियों में संक्रमण व फैलाव।
- ☞ ग्रीवा व सिर की पेशियों में संकुचन होने से।
- ☞ मस्तिष्क कोशिकाओं द्वारा बायोकैमिकल पदार्थों का स्राव तथा निकट की धमनियों की सतह में इन्फ्लामेशन।

उपचार

- ☞ माइग्रेन के दर्द में सिर, गर्दन और कंधों की मालिश से राहत मिलती है। इसके लिए हल्की खुशबू वाले तेल का प्रयोग किया जा सकता है।
- ☞ माइग्रेन का दर्द आरम्भ होने पर रोगी को बेड पर लिटा देवें और उसके सिर को बेड के नीचे की ओर लटका दें। सिर के जिस भाग में दर्द है उस तरफ की नाक में सरसों के तैल की कुछ बूंदे डालें और रोगी को जोर से सासों को उपर खींचने को कहें। कुछ ही देर में दर्द कम होने लगेगा।
- ☞ गाय के घी में थोड़ा सा कपूर मिलाकर सिर पर हल्की-हल्की मालिश करने पर दर्द में राहत मिलती है।
- ☞ माइग्रेन के दर्द में कुछ को ठण्डी वस्तुओं से

आराम मिलता है और कुछ को गर्म से। अगर आपको गर्म से आराम मिलता है तो गर्म पानी में तौलिया भिगोकर दर्द वाले भाग पर रखें और यदि ठण्डे से आराम मिलता है तो ठण्डे पानी में तौलिया भिगोकर दर्द वाले भाग पर कुछ देर रखने से दर्द में राहत मिलने लगेगी।

☞ सुबह खाली पेट सेब खाने से माइग्रेन के दर्द में काफी लाभ होता है।

☞ हर रोज दिन में दो बार गाय के देशी घी की २-२ बूंद नाक में डालने से आराम हो जाता है।

☞ ताजा अदरक की एक गाँठ व मिश्री दोनों को खरल में पीसकर कपड़े में रखकर जिस तरफ सिर में दर्द हो उस तरफ के नथुने में २-३ बूंद का नस्य देने से तत्काल लाभ मिलता है।

☞ गोदन्ती भस्म १२५ मि.ग्राम।

☞ कपर्द भस्म १२५ मि.ग्राम।

☞ काम दुधारस १२५ मि.ग्राम।

☞ गिलोय सत्व १२५ मि.ग्राम।

इन चारों को मिलाकर एक मात्रा बनावें। ऐसी एक-एक मात्रा सुबह-शाम जलेबी की चाशनी के साथ लेने से माइग्रेन ठीक हो जाता है।

☞ शिरः शूलादि वज्र रस २ गोली।

☞ गोदन्ती भस्म २५० मि.ग्राम।

ऐसी एक-एक मात्रा सुबह-शाम पथ्यादिकाढ़ा २० ml (मि.ली.) के साथ लेने से माइग्रेन में लाभ हो जाता है।

माइग्रेन से बचने के उपाय

☞ तेज धूप में बाहर निकलने से बचें।

☞ आवश्यकता से अधिक सोने व कम नींद लेने से परहेज करें।

☞ भूखे न रहें। माइग्रेन के रोगी को अधिक समय तक खाली पेट नही रहना चाहिए।

☞ टीवी व कम्प्यूटर का प्रयोग ज्यादा पास बैठकर न करें। मोबाइल का अधिक समय तक उपयोग न करें।

☞ कम रोशनी में बारीक काम न करें।

☞ तेज गंध वाले सेंट व इत्र लगाने से बचें।

☞ तनाव से बचें, गहरी श्वास लेवें व नियमित प्राणायाम करें।

☞ माइग्रेन के रोगियों को एक जैसी दिनचर्या बनाये रखनी चाहिए। नींद के समय में बदलाव न करें। अनियमित दिनचर्या इस रोग की वृद्धि करने में सहायक है।

☞ सिर झुकाकर लम्बे समय तक न बैठें। यदि कम्प्यूटर पर लगातार काम करना पड़े तो हर आधे घण्टे में पाँच मिनट के लिए आराम करें।

लेखक- वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेदिक चिकित्सक
१३ श्री राम नगर, से.-६
हिरणमगरी, उदयपुर

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 31010201004151 8, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास **भवानीदास आर्य**, मंत्री-न्यास **डॉ. अमृत लाल तापड़िया**, संयुक्तमंत्री-न्यास

कथा सरित

कहानी दयानन्द की

सत्याग्रही और सत्य कहने में जो तनिक भी संकोच न करें, ऐसे महापुरुषों के मन में चाहे संसार के कल्याण की भावना हिलोरें ले रहीं हों, देखा यह गया है कि जहाँ उनके लाखों समर्थक बनते हैं, वहीं उनके शत्रुओं की भी कमी नहीं रहती। महर्षि दयानन्द के जीवन में यत्र-तत्र-सर्वत्र इस प्रकार के प्रसंग हमें मिलते हैं जहाँ कि महर्षि दयानन्द जी के सत्य कथन को न पचा पाने के कारण लोग उनके प्रति इस हद तक शत्रुता अपने मन में पाल लेते थे कि उनके ऊपर प्राण घातक प्रहार करने में भी उनको तनिक संकोच नहीं होता था। यद्यपि वे जानते थे कि महर्षि दयानन्द सत्य और केवल सत्य बोल रहे हैं परन्तु वह सत्य उनकी मान्यता के अनुरूप नहीं था इसलिए वे वक्ता के जीवन पर प्रहार करना चाहते थे, बजाय इसके कि असत्य को छोड़कर के सत्य को ग्रहण कर लेते।

कर्णवास-प्रवास में स्वामी जी के साथ ऐसा ही हुआ। पाठकों को भली-भाँति विदित होगा कि श्री कृष्ण जी के पवित्र जीवन चरित्र में अनेकों कल्पित कलंकित कथाएँ घुसा करके, मिलावट करके उनके चरित्र को दूषित करने का प्रयास उन्हीं के तथाकथित भक्तों द्वारा किया गया और यही नहीं उस अपने द्वारा घढ़े गए अपमिश्रित चरित्र को जनता में प्रदर्शित करने में तनिक भी लज्जा अनुभव न करते हुए रासलीलाओं के माध्यम से सार्वजनिक रूप से वह सब प्रदर्शित करते थे। स्वामी दयानन्द का मानना था, जैसा कि उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा कि- 'श्री कृष्ण एक आप्त पुरुष थे और उन्होंने जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त एक भी गलत आचरण नहीं किया था।' तो ऐसे महापुरुष के जीवन के सन्दर्भ में जब यह मिलावटें की गईं तो ऋषि दयानन्द ने कर्त्तव्य जानकर इनका खण्डन करना प्रारम्भ किया। इसी कारण स्वामी जी उस समय रासलीलाओं का तीव्र खण्डन करते थे।

कर्णवास से कुछ दूर बरौली नाम का एक गाँव था। वहाँ के एक बड़े जमींदार राव कर्णसिंह थे। जब वे कर्णवास आए और उन्होंने स्वामी जी के रासलीला खण्डन के बारे में सुना तो वे स्वामी जी के डेरे पर गए और बड़ी अशिष्ट भाषा में उनसे वार्तालाप प्रारम्भ किया। स्वामी जी पूर्ववत् अपना व्याख्यान देते रहे। स्वामी जी के खण्डन-वचनों को सुनकर के कर्णसिंह के तन-मन में आग लग गई और वह तलवार निकाल कर के स्वामी जी के ऊपर उनका प्राणान्त करने के उद्देश्य से झपटा। स्वामी जी ने दाएं हाथ से उसके तलवार वाले हाथ को पकड़कर तलवार को उससे छीन और जमीन में दबाते हुए तलवार के दो टुकड़े कर दिए। इस बल को देखकर राव कर्णसिंह हतप्रभ रह गया। स्वामी

जी ने सन्तुलित वाणी में कर्णसिंह को कहा कि- अगर तुमको शस्त्रार्थ करना है तो जयपुर आदि के राजाओं से लड़ो और शास्त्रार्थ करना है तो वृंदावन से अपने गुरु रंगाचार्य को बुला लो। जो भी हारे वह अपना मत छोड़ दे। अब इतनी बात कहने पर भी जब कर्णसिंह की समझ में बात नहीं बैठी तो वहाँ उपस्थित लोगों ने विशेष कर ठाकुर किशन सिंह ने कर्णसिंह को कहा की भलाई इसी में है कि तुम यहाँ से चले जाओ। तब कर्णसिंह घबराया और लज्जित होकर अपने डेरे पर चला गया। इतना सब कुछ होने के बाद भी स्वामी जी पूर्ववत् अपना व्याख्यान देने में लगे रहे मानो कोई विघ्नकारी घटना हुई ही नहीं। धन्य है ऐसी स्थितप्रज्ञता। बताते ऐसा हैं कि कर्णसिंह का अन्त बहुत बुरा हुआ और हर तरीके से उसके स्वास्थ्य की, धन की और नैतिकता की हानि हुई।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

3 JULY

13 JULY

20 JULY

22 JULY

23 JULY

30 JULY

1 JULY

इन सभी सम्मानित न्यासी आर्य बन्धुओं को उनके जन्मदिवस के पावन अवसर पर न्यास, NMCC एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाईयाँ।

समाचार

श्री अर्जुनदेव चड्ढा जी का निधन आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति

आर्य जगत् के, विशेषतः राजस्थान के हाड़ोती संभाग के, सुप्रसिद्ध आर्य नेता और महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, परोपकार और समाज सेवा क्षेत्र में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने वाले और यश अर्जित करने वाले भाई अर्जुनदेव चड्ढा जी का निधन न केवल उनके परिवार के लिए वरन् सम्पूर्ण आर्य जगत् के लिए अपूरणीय क्षति है। पाँच दशकों से भी ज्यादा समय तक श्री चड्ढा हाड़ोती क्षेत्र में आर्य समाज के कार्यक्रमों को एक दिशा प्रदान करते रहे। उनके सफल नेतृत्व के चलते अनेक आर्यजन संगठित होकर के आर्य समाज का एक बेहतर स्वरूप हाड़ोती क्षेत्र वासियों के सम्मुख रख पाते थे। स्थानीय समाचार पत्रों में प्रायः उनकी और उनके कार्यों की चर्चा होती थी। अभी हाल ही में उन्होंने बहुत सुन्दर स्मारिका का प्रकाशन भी किया था। इस प्रकार यह अत्यन्त दुःखद है कि बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हमारे साथी श्री अर्जुनदेव आज हमारे मध्य नहीं हैं, परन्तु प्रसन्नता की बात यह है कि उन्होंने अपने परिवार में वैदिक संस्कार सम्प्रेषित किए हैं। उनके पुत्र श्री राकेश चड्ढा आर्य समाज के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। अतः हम भविष्य में आशा रख सकते हैं कि प्रिय राकेश जी के द्वारा अर्जुनदेव जी की कमी को खलने नहीं दिया जाएगा। न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्य परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान देने की प्रार्थना करते हैं और चड्ढा जी के परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हैं।

– अशोक आर्य, अध्यक्ष

आर्यवीर युवा संस्कार शिविर सम्पन्न

आर्य समाज छोटी सादड़ी एवं निम्बाहेड़ा के संयुक्त तत्वावधान में ८ दिवसीय आर्यवीर युवा संस्कार शिविर प्रतापगढ़ जिले के छोटी सादड़ी नगर के दयानन्द वाटिका में वरिष्ठ समाजसेवी डॉक्टर वृद्धि शंकर उपाध्याय के मुख्य आतिथ्य, शिविराधिपति मोहनलाल आर्य पुष्प की अध्यक्षता एवं आचार्य कर्मवीर मेधार्थी, डॉ. मथुरा लाल धाकड़, आर्य समाज छोटी सादड़ी के प्रधान बाबूलाल पाटीदार एवं आर्य समाज निम्बाहेड़ा के एडवोकेट रतनलाल राजोरा के विशिष्ट आतिथ्य में २५ मई शनिवार को सम्पन्न हुआ। शिविर प्रभारी डॉक्टर मथुरा लाल धाकड़ के अनुसार शिविर दिनांक १७ से २५ मई तक चला। जिसमें १२० शिविरार्थियों का पंजीयन हुआ।

शिविर के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों में शिवांगी जौहरी-जिला एवं सत्र न्यायाधीश प्रतापगढ़, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी छोटी सादड़ी-राजेंद्र कुमार, नायब तहसीलदार छोटी सादड़ी-राधेश्याम जोशी, समाजसेवी डॉक्टर वृद्धि शंकर उपाध्याय, आचार्य कर्मवीर मेधार्थी, आबकारी अधिकारी छोटीसादड़ी-सुरेश धाकड़ आदि उपस्थित रहे।

शिविर में बालकों ने व्यायाम, भूमि नमस्कार, आसन, पिरामिड, लाठी संचालन, नियुद्ध आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया एवं चित्रकला प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, बौद्धिक प्रतियोगिता, शारीरिक प्रतियोगिता, अनुशासन एवं सेवा कार्यों की प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को शिविर के समापन समारोह में पुस्तकों एवं प्रशंसा पत्रों से सम्मानित किया गया। शिविर में सेवाएँ देने वाले निष्णात शिक्षकों में जीवनलाल जी आर्यवीर-सनवाड़ उदयपुर उल्लेखनीय हैं।

शिविराधिपति मोहनलाल आर्य पुष्प ने आगन्तुकों का स्वागत किया। डॉ. मथुरा लाल धाकड़ ने प्रतिवेदन एवं चन्द्रप्रकाश साहू ने सभी का आभार प्रदर्शित किया। आचार्य कर्मवीर मेधार्थी ने सम्बोधित किया।

शिविर को सफल बनाने में रविन्द्र साहू, शिवलाल आंजना, विक्रम आंजना, विशाल साबू, किशन लाल माली, मंजू धाकड़ ने सहयोग दिया।

जनजाति विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने नवलखा महल का अवलोकन किया

नवलखा महल महर्षि दयानन्द सरस्वती से सम्बन्धित एक ऐसा ऐतिहासिक स्थल है जहाँ स्वामी जी ने महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की और अब उसे आर्य समाज के द्वारा एक बहुत ही सुन्दर

स्मारक के रूप में इस प्रकार विकसित किया गया है कि यह मानव मूल्यों को स्थापित करने वाला अपने आप में एक विशिष्ट केन्द्र बन चुका है। यहाँ की पंचमहायज्ञ दीर्घा, भारत गौरव दर्शन, राष्ट्रोन्नायक वीथिका, संस्कार वीथिका, मिनी थियेटर और आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा अध्यात्म और राष्ट्रवाद को समर्पित हैं। किस प्रकार से एक व्यक्ति अपने जीवन में संस्कारों को समाहित करते हुए राष्ट्र ही नहीं विश्व के लिए एक मूल्यवान भूमिका निभा सकता है, इसे सीखना है तो नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र में हर एक को आना चाहिए, ऐसे भाव माननीय मंत्री जी ने प्रकट किए और शुभकामना प्रकट करते हुए हर प्रकार के सहयोग की भावना भी प्रकट की।

इस अवसर पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने मंत्री जी का स्वागत ओ३म् दुपट्टा और मेवाड़ी पाग से किया, तो वहीं न्यास के जनसम्पर्क सचिव श्री विनोद राठौड़ ने ओ३म् दुपट्टा पहना कर अपने स्वागत के भाव प्रकट किये। इस अवसर पर नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र को जीवन्त रखने वाला समस्त स्टाफ उपस्थित था।

इस अवसर पर न्यास की ओर से मंत्री जी को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भेंट करने के साथ ही वेद मन्त्रों के सुन्दर व्याख्यान स्वरूप 'श्रुति सौरभ' भेंट की गई।

बेशर्म ज्योतिषी

फलित ज्योतिष के नाम पर विश्वभर में भ्रामक व्यवसाय चलाया जाता है और उसे वैज्ञानिकता का खोल भी पहनाया जाता है, परन्तु घोर अवैज्ञानिक यह सारा उपक्रम लोगों के विवेक को कैसे विनष्ट कर पाने में समर्थ हो रहा है? यह अनुसंधान का विषय है। हमने पहले भी इस विषय पर बहुत सारे लेख लिखे, संपादकीय लिखे जिनमें सप्रमाण यह प्रमाणित किया कि ज्योतिष विद्या के नाम पर केवल ऐसे तुक्के लगाए जाते हैं जिनमें से कभी-कभी कुछ तीर बन जाते हैं। विशेष रूप से बात करें तो पिछले कई चुनावों में भविष्यवक्ताओं द्वारा की गई भविष्यवाणियों के पूर्णतः झूठ हो जाने के पश्चात् हमने आपके सामने इस विषय को इस मानस से रखा कि कुछ लोग ही सही, अगर यह समझ जाएँ कि यह फलित ज्योतिष पूर्णतः अंधविश्वास ही है इससे ज्यादा कुछ नहीं, तो भी कुछ तो समाज का भला होगा।

परन्तु हर बार हम देखते हैं कि पिछली बातों को भूलकर लोग पुनः इसी धंधे में शामिल हो अपना धन और विवेक विनष्ट करने में झिझकते नहीं। इसी मानसिकता पर इन ज्योतिषियों का व्यापार चल रहा है। एक बहुत बड़े ज्योतिषी कहे जाते हैं जिनके नाम के आगे सन्त भी जोड़ा जाता है। आप कहीं भी यूट्यूब पर या ऐसे ही प्लेटफार्म देखेंगे इनकी भविष्यवाणियाँ आपको मिल जाएँगी। २०२४ के लोकसभा चुनाव में भी अनेक ज्योतिषियों ने चुनाव परिणाम की भविष्यवाणी की परन्तु सभी ध्वस्त हो गए अतः जिनकी बात मैं यहाँ पर कर रहा हूँ उसे आप केवल एक उदाहरण के तौर पर लीजिए। इस सन्त नामधारी ज्योतिषी ने ४२२ सीटें एनडीए की बताईं जिनमें अधिकतम ७ का अन्तर सम्भावित था अर्थात् ४१५ से लेकर ४२६ तक सीटें एनडीए की आएँगी, ऐसा इनका दावा था। हुआ क्या? २४० सीटें आईं। होना क्या चाहिए कि इनको सभी पाठकों से क्षमा माँगनी चाहिए और ज्योतिष विद्या की असारता भी स्वीकार कर लेनी चाहिए। परन्तु बेशर्मी की हद तो तब है जब अभी चुनाव को बीते और उनकी भविष्यवाणी गलत साबित हुए एक सप्ताह भी नहीं बीता है यह मोदी जी के कार्यकाल पर नई भविष्यवाणियाँ लेकर के आ गए और इनको प्रस्तुत करने वाली एंकर इनकी महिमा का विशद् वर्णन कर रहीं थीं। क्या आशा की जा सकती है कि यह असत्य-व्यापार कभी समाप्त होगा?

देहदानी विदुषी शान्ति भण्डारी बहिन जी को १३वीं पुण्य तिथि पर किया स्मरण

नगर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर में आज १६ जून २०२४ रविवार को श्री गोवर्धन जी-श्रीमती गायत्री जी दम्पति के यजमानत्व तथा श्री धर्मवीर जी के ब्रह्मत्व में साप्ताहिक यज्ञ हुआ जिसमें श्रद्धालुओं ने आहुतियाँ दीं।

श्रीमती उषा, कंचन, पुष्पा आर्या, गायत्री, नीलू आदि ने बहुत ही सुन्दर बोल के भजनों की प्रस्तुति दीं। सत्यार्थप्रकाश का वाचन डॉक्टर सतीश कच्छावा ने किया।

प्रधान महेश आर्य, डॉ सतीश, धर्मवीर, नरसिंह, भगवती प्रसाद आदि ने विदुषी शान्ति भण्डारी बहिन जी की १३वीं पुण्यतिथि पर स्मरण कर उनकी जीवनी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे त्याग की साक्षात् मूर्ति थीं। जिन्होंने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति परोपकार हेतु वसीयत से दान करने के साथ ही देहदान भी कर दिया। आप शिक्षक और स्काउट गाइड के सर्वोच्च पुरस्कार से सुशोभित हुयीं। जहाँ आपने आर्य समाज को ८.१० लाख रुपये दिये तो आपके वारिस माननीय श्री सुशील -सरोज (अग्रवाल नमकीन, उदयपुर) ने भी आपकी स्मृति में २.१२ लाख की राशि उपलब्ध करायी। {नोट- बहिन जी ने न्यास को भी इस क्रम में उपकृत किया।} अन्त में शान्ति पाठ के पश्चात् वैदिक उद्घोष के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

- भगवती प्रसाद, मंत्री-आर्य समाज

विशेष यज्ञ अनुष्ठान

आर्य समाज हिरण मगरी; उदयपुर की ओर से गत एक माह से चल रहे यज्ञ के अतिविशिष्ठ अनुष्ठान का समापन दिनांक २२ जून, २०२४ को पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन मे यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यज्ञ से हमें आध्यामिक लाभ तो होता ही है भौतिक लाभ उससे भी अधिक होता है। राम-कृष्ण से लेकर आज तक जितने महापुरुष हुए उनके जीवन के उत्कृष्ट कार्यो मे यज्ञ महत्वपूर्ण रहा है।

स्वर्ग की कामना वाले प्रत्येक मनुष्य को यज्ञ करना चाहिए। स्वर्ग का अर्थ सुख विशेष है। यज्ञ की आत्मा 'स्वाहा' समर्पण है। वहीं यज्ञ का प्राण 'इदन्न मम' है- अर्थात् मेरे लिए नहीं बल्कि यह संसार के उपकार के लिए है। समारोह के अध्यक्ष डॉ. प्रेमचन्द गुप्त ने 'वर्षा की कामना' वाले वेद मंत्रों को विस्तार से समझाया।

पण्डित इन्द्र प्रकाश यादव के पौरोहित्य में एक मास तक चले इस यज्ञानुष्ठान के आज के मुख्य यजमान सुरेश आर्य, श्रीमती उषा आर्य, श्रीमती उगंता यादव व पुत्र युवान यादव, रामनिवास गदिया, सुभाष कोठारी थे। श्रीमती सरला गुप्ता तथा राधा त्रिवेदी ने ईश भक्ति के भजन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर भँवर लाल आर्य एवं कृष्ण कुमार सोनी का सम्मान किया गया। भवानीदास आर्य, संजय शाण्डिल्य, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, डॉ. शारदा गुप्ता, ललिता मेहरा, रमेशचन्द्र जायसवाल, अम्बालाल सनाढ्य, प्रेमलता मेनारिया, पुष्पा सिंधी, शंकर लाल मरमट, भूपेन्द्र शर्मा, अनन्त देव शर्मा, आनन्द राज माथुर, हजारीलाल आर्य, क्षेत्र की पार्षद् विद्या भावसार, मेवाड़ शक्ति कल्याण ट्रस्ट की अध्यक्ष बसन्ती देवी सहित अनेक समाजसेवी बन्धुओं ने भागीदारी की।

- रामदयाल मेहरा

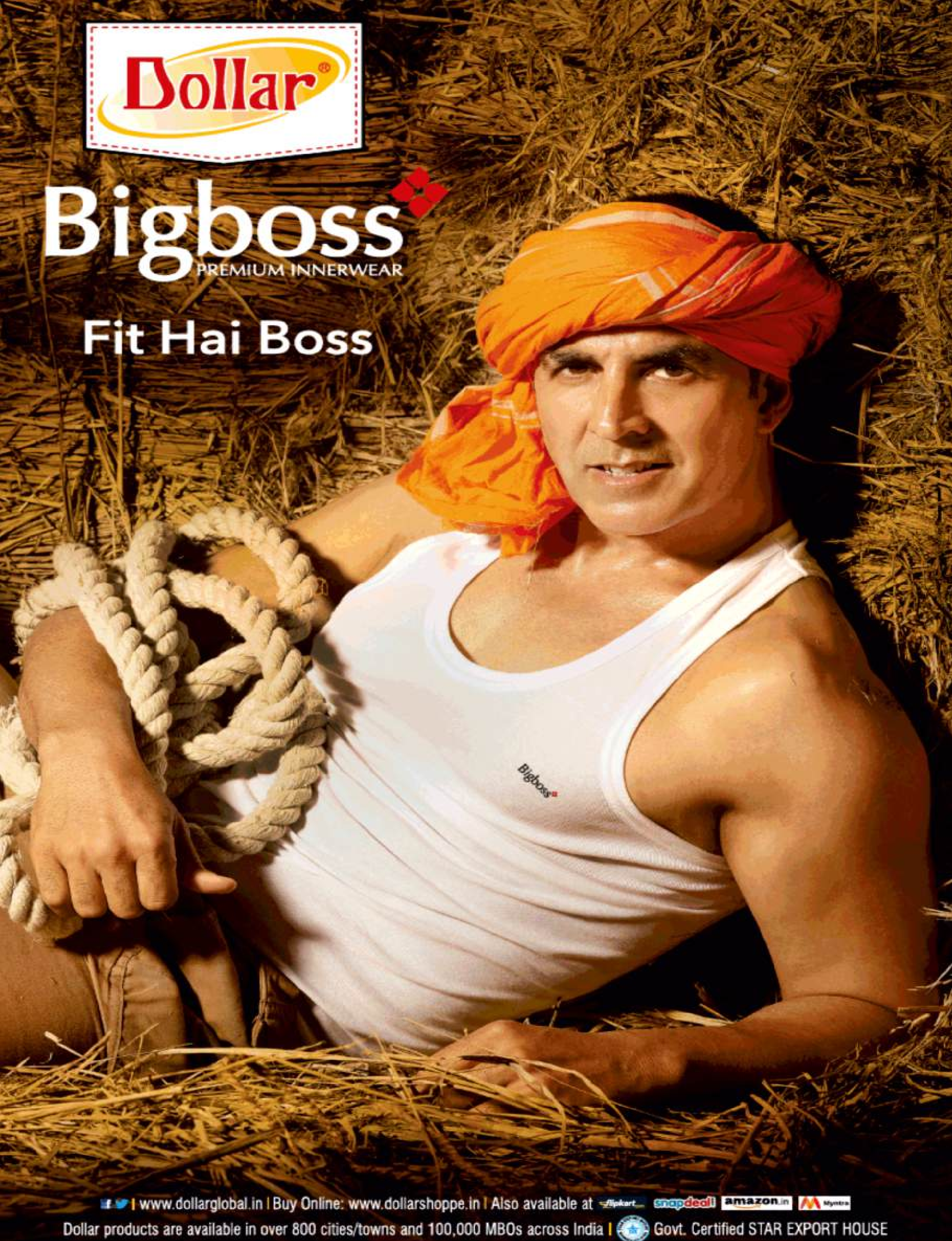
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

पवित्र कर्म, पवित्रोपासना और पवित्र ज्ञान से ही मुक्ति और अपवित्र मिथ्याभाषणादि कर्म, पाषाणमूर्त्यादि की उपासना और मिथ्याज्ञान से बंध होता है। कोई भी मनुष्य क्षणमात्र भी कर्म, उपासना और ज्ञान से रहित नहीं होता। इसलिए धर्मयुक्त सत्यभाषणादि कर्म करना और मिथ्याभाषणादि अधर्म को छोड़ देना ही मुक्ति का साधन है।

- नवम समुल्लास पृष्ठ २३२-२३३

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर